भारतीय वाङ्मय

हिन्दी तथा अहिन्दीभाषी क्षेत्रों के साहित्यिक-सांस्कृतिक समाचारों की मासिक पत्रिका

वर्ष 7 | जुलाई 2006 | अंक 7

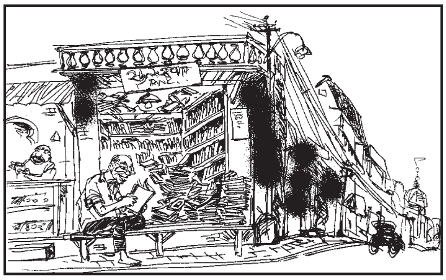

किताबें

वे सदा कहती आई हैं
मुझे हाथ में ले लो
मुझे गोद में रख लो
मुझे सीने से लगा लो
मुझे हृदय में बसा लो।

हाँ, और फिर उनका रटना
जब भी चाहे दिवस हो या रात
मुझे पढ़ते ही रहना
मुझे जब भी चाहे पढ़ लोगे तो
बहुत कुछ मैं दूँगी
आँखों में भर लोगे तो
कभी हँसा के
अश्रुओं से संसार तक भर दूँगी,

सपने अपने चाहे सजाओ
दुखड़े तो मैं उखाड़ ही दूँगी
खोटे अपनों से शीघ्रताशीघ्र
मैं छुटकारा भी दिला दूँगी

और फिर,
तुम त्यागो तो और बात है
मैं कभी ना छोड़ूँगी
एक बार अपना ही लिया तो
हाथ और हृदय तो क्या
आलमारी तक ना त्यागूँगी
यह सच है
कि
हाथ जो थामा है
तुम तो मेरे ही हो
मैं भी तुम्हारी रहूँगी
दीमक तक लग जाए
जल में भी भीग जाऊँ
जलाकर राख तक कर दो

पुस्तकें पढ़ने की प्रवृत्ति

देश विभाजन और स्वतंत्रता मिलने के पश्चात पूर्व पंजाब से अनेक प्रकाशक शरणार्थी होकर दिल्ली आये और प्रकाशन-व्यवसाय को नई दिशा, नई ऊर्जा प्रदान की। उनके सामने देश का विशाल पाठक वर्ग था। पुस्तकों के अतिरिक्त पत्र-पत्रिकाएँ भी खूब निकलीं। दिल्ली प्रेस के श्री विश्वनाथ ने महिलाओं के लिए 'सरिता' पत्रिका निकाली जो बहुत लोकप्रिय हुई। उसके उपरान्त साप्ताहिक हिन्दुस्तान, धर्मयुग, वामा, दिनमान सभी पत्र-पत्रिकाओं ने पाठकों की संख्या बढ़ाई। इनके पाठकों में महिलाओं की संख्या अधिक रही जो दिन में घर के काम से निवृत्त हो पत्र-पत्रिकाएँ और पुस्तकें पढ़ती थीं। पुस्तकों के पेपरबैक सस्ते संस्करण भी प्रकाशित होने लगे। गुलशन नन्दा की पुस्तकें बहुत लोकप्रिय हुईं। लेखक को इन पुस्तकों पर एक लाख रुपये तक रायल्टी मिली।

यह स्थिति धीरे-धीरे बदलती गई। ज्यों-ज्यों दूरदर्शन और टेलीविजन का विकास होता गया, पुस्तक पढ़ने वाले पाठकों की संख्या घटती गई। उनका मन और समय टेलीविजन के कार्यक्रमों में लगने लगा। बच्चे, स्त्रियाँ जो फुरसत के समय पुस्तकें पढ़ते थे अब पुस्तकें छूते भी नहीं, टेलीविजन के विभिन्न चैनलों में घूमते रहते हैं। महिलाएँ भी अब काम काजी हो गई; इतना ही होता तो गनीमत थी। कम्प्यूटर ने एक नया आयाम स्थापित कर दिया। आजकल प्रबुद्ध, सम्भ्रान्त तथा सम्पन्न घरों में कम्प्यूटर आ गये हैं, बच्चे कम्प्यूटर पर गेम्स देखने-खेलने लगे हैं। पुस्तकों की पढ़ाई में उनका मन नहीं लगता।

आज देश में हिन्दी समाचारपत्रों की विशाल संख्या हो गई है। 'दैनिक जागरण' देश के दस प्रदेशों से विभिन्न नगरों से निकल रहा है जिसके पाठकों की संख्या करोड़ों में है, 'भास्कर' की यही स्थिति है, 'अमर उजाला' पन्द्रह शहरों से निकलता है। 'प्रभात खबर' के भी लाखों पाठक हैं। राजस्थान में 'राजस्थान पत्रिका' व्याप्त है। इन सबके पाठकों की संख्या का आकलन किया जाय तो यह करोड़ों में होगी। इनकी तुलना में हिन्दी पुस्तक पढ़ने वालों की संख्या नगण्य है।

किसी समय पत्र साहित्यिक रचनाओं, पुस्तक-समीक्षा आदि से भरे रहते थे। पाठकों को नई पुस्तकों की जानकारी कराते थे, पढ़ने के लिए प्रेरित करते थे। अब इन समाचार-पत्रों का स्वरूप पूर्णतया व्यावसायिक हो गया है।

राजनीतिक रूप से सजग हिन्दी प्रदेश का नागरिक प्रतिदिन की घटनाओं, नेताओं की उठा-पटक, हत्या, अपराध, व्यभिचार के समाचारों के प्रति अधिक जागरूक है। टेलीविजन पर इनके दृश्य भी देखने को मिल जाते हैं; किन्तु पुस्तकें पढ़ने में दिलचस्पी नहीं है।

एक समय था जब देवकीनंदन खत्री की पुस्तकें चन्द्रकांता, चन्द्रकांता संतति, भूतनाथ आदि पढ़ने के लिए लोग हिन्दी सीखते थे। मुम्बई की लोकल ट्रेनें, ट्राम आदि में चन्द्रकांता के पाठक दिखाई देते थे। रेलवे बुक स्टाल भी यात्रियों को मानसिक आहार प्रदान करते थे। कभी पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी ने कहा था—''वर्तमान युग के पाठक उस युग की कल्पना नहीं कर सकते जब देवकीनंदन खत्री के मोहजाल में पड़कर हमलोग सचमुच निद्रा और क्षुधा छोड़ बैठे थे।''

शेष पृष्ठ 5 पर

पर, तुम्हारे नाम के हस्ताक्षर
जो मेरे सामने तराशें हैं
वे वैसे के वैसे तराशें हैं
वे वैसे के वैसे बने रहेंगे
प्रकाशक, लेखक, पाठक, वितरक, के फेरे
कभी ना मिटेंगे

तू मेरा
मैं तेरी
किसी भी आपाधापी में
हम रहेंगे
एक दूजे के लिए
जीवन के अन्त तक
चश्मे चढ़ा चढ़ाकर
तुम भी मुझे क्यों भूलोगे ?

—**अमृता**

किताबें

जीवन की मुस्कान किताबें
बहुत बड़ा वरदान किताबें।
गूँगे का मुँह बनकर बोलें
बहरे के हैं कान किताबें।

अन्धे की आँखें बन जाएँ
ऐसी हैं दिनमान किताबें।
हीरे-मोती से भी बढ़कर
बेशकीमती खान किताबें।

जिनके आने से मन हरषे
ऐसी हैं मेहमान किताबें।
क्या बुरा यहाँ क्या है अच्छा
करती हैं पहचान किताबें।

धार प्रेम की बहती इनमें
फैलाती हैं ज्ञान किताबें।
राहों की हर मुश्किल को
कर देती आसान किताबें।

इस धरती पर सबके ऊपर
सबसे बड़ा अहसान किताबें।
इनसे अच्छा दोस्त न कोई
करती हैं कल्याण किताबें।

कभी नहीं ये बूढ़ी होती
रहती सदा जवान किताबें।

—**रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु'**
फिरोजाबाद

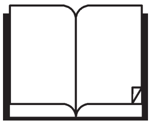

जीवन के शैल
शिखर सागर भी
होते हैं ग्रन्थ
जैसे कि वेद
बाइबिल, कुरान।

—**डॉ० रमेशकुमार त्रिपाठी**

हिन्दी संस्थान, उत्तर प्रदेश 2004 के पुरस्कार घोषित

भारत भारती (2.51 लाख) : नामवर सिंह, **लोहिया साहित्य सम्मान** (प्रत्येक दो लाख) : डॉ० रमेश कुन्तल मेघ, **महात्मा गाँधी सम्मान** : डॉ० विवेकी राय, **हिन्दी गौरव सम्मान** : डॉ० रामचन्द्र तिवारी, **दीनदयाल उपाध्याय सम्मान** : नरेन्द्र कोहली, **अवन्ती बाई सम्मान** : हिमांशु जोशी, **मधुलिमये स्मृति पुरस्कार** (एक लाख) : डॉ० शोभनाथ यादव, **पत्रकारिता के लिए पुरस्कार** : (एक लाख), **बालकृष्ण भट्ट पुरस्कार** : दैनिक जागरण समूह, **आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी पुरस्कार** : विष्णु खन्ना।

युवा पत्रकारों के लिए

जुगलकिशोर शुक्ल पुरस्कार : इम्तियाज अहमद अली, **गणेशशंकर विद्यार्थी पुरस्कार** : रामदत्त त्रिपाठी, **पत्रकारिता भूषण सम्मान** : आलोक मेहता।

साहित्य भूषण सम्मान (50 हजार) : दूधनाथ शर्मा 'शीश', डॉ० व्रजवल्लभ मिश्रा, डॉ० इन्दु जैन, डॉ० उदयभानु, कृपाशंकर शुक्ल, डॉ० उषा सक्सेना, गुलाब सिंह, डॉ० प्रतिभा वर्मा, दूधनाथ सिंह, व्रजराज पाण्डेय, डॉ० भवदेव पाण्डेय, मदनमोहन सिन्हा 'मनुज', से० रा० यात्री, शान्तिस्वरूप कुसुम तथा रामकृष्ण राजपूत।

अन्य सम्मान

लोकभूषण (प्रत्येक को 50 हजार) : अयोध्याप्रसाद गुप्त 'कुमुद', **कलाभूषण** (50 हजार) : डॉ० गिरीश रस्तोगी, **विद्या भूषण** : डॉ० रामदेव शुक्ल, **विज्ञान भूषण** : एयर वाइस मार्शल विश्वमोहन तिवारी, **प्रवासी भारतीय हिन्दी भूषण** : डॉ० कृष्णकुमार (यू०के०), **हिन्दी विदेश प्रसार** : अनूप भार्गव व डॉ० जगदीश सरीन, **बाल साहित्य भारती** : कृष्ण शलभ, **विश्वविद्यालय स्तरीय सम्मान** (25 हजार) : वेदप्रकाश अमिताभ, बृजेशकुमार श्रीवास्तव, **सौहार्द सम्मान** (15 हजार) : निर्मला पुतुल (संस्थाली), डॉ० शान्ति सुमन (मैथिली), डॉ० राजन पिल्लै (तमिल), डॉ० केशव फाल्के (मराठी)।

वर्ष 2002 में प्रकाशित पुस्तकों पर 20-20 हजार राशि के नामित पुरस्कार डॉ० उर्मिलकुमार थपलियाल, जगदीश पीयूष, डॉ० आशाराम त्रिपाठी, शिवकुमार मिश्र, डॉ० एचपी गुप्त, डॉ० श्यामबाला राय, जोगेन्द्र सिंह, अमर गोस्वामी, देवप्रकाश बटुक, जितेन्द्र श्रीवास्तव, डॉ० पृथ्वीकुमार अग्रवाल (प्राचीन भारतीय कला एवं वास्तु) तथा डॉ० आर० गणेशन (भारतीय संग्रहालय एवं जनसम्पर्क) प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, यश मालवीय, रागिनी चतुर्वेदी, अजयशंकर पाण्डेय, प्रतिभा जौहरी, डॉ० सुशील सिद्धार्थ और देवेन्द्र कुमार आर्य को उनकी पुस्तक पर मिलेगा। पत्रिकाओं के पुरस्कार के लिए तद्भव के सम्पादक अखिलेश को चुना गया है। पुस्तकों पर ही आठ-आठ हजार रुपये के सर्जना पुरस्कार के लिए सर्वेश अस्थाना, डॉ० विजयानन्द, डॉ० रामरजपाल द्विवेदी, अमरनाथ शुक्ल, डॉ० आद्याप्रसाद सिंह प्रदीप, डॉ० राजकुमार शर्मा, डॉ० एएल श्रीवास्तव, डॉ० अमरबहादुर सिंह, डॉ० अमरनाथ सिंह, डॉ० जोगा सिंह होठी, डॉ० अनीता शर्मा, डॉ० गिरीशचन्द्र श्रीवास्तव, पुष्पा सुमन, डॉ० हरिपाल सिंह व डॉ० अशोककुमार सिंह को चुना गया है। इसके अतिरिक्त 35 से 50 आयु वर्ग में महिला कथा लेखिका के लिए शुरू किये गये आठ हजार रुपये के पहले बद्रीप्रसाद शिंगलू स्मृति सम्मान से डॉ० मनसा पाण्डेय को सम्मानित किया जायेगा।

पेपरलेस स्टडी बनाम पुस्तक पढ़ाई

पेपरलेस जर्नलिज्म के बाद पेपरलेस स्टडी का यह एक नया दौर शुरू हो रहा है जिसमें विशेषकर प्रतियोगी परीक्षाओं में हिस्सेदारी करने वाले छात्र आजकल बड़ी-बड़ी किताबों की बजाए सीडी खरीद रहे हैं और मल्टीमीडिया उपकरणों के जरिए पढ़ाई कर रहे हैं। राजधानी दिल्ली, मुम्बई जैसे देश के कई महानगरों में ऐसे तमाम पब्लिक स्कूल भी हैं जहाँ एक स्तर तक पढ़ाई पेपरलेस हो चुकी है। पेपरलेस स्टडी में काफी फायदे हैं। चूँकि इसमें मीडिया के कई हिस्से शामिल होते हैं इसलिए इस माध्यम से चीजों को समझना ज्यादा आसान होता है। उदाहरण के लिए, किताबें सिर्फ पढ़कर समझी जाती हैं लेकिन किसी मल्टीमीडिया सिस्टम के जरिए जब किसी फंक्शन के बारे में समझाया जाता है तो उसमें आवाज भी होती है, डायग्राम भी होते हैं, समझाने का काम करके दिखाने वाला तरीका भी होता है और प्रकाश, ध्वनि जैसी ऐसी विधाओं का भी सहारा लिया जाता है जो किसी किताब को पढ़ते समय सम्भव ही नहीं है।

लेकिन इसकी अपनी कुछ दिक्कतें भी हैं। मसलन, आप पेपरलेस स्टडी बिना इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों और बिजली या बैटरी के नहीं कर सकते। कहने का मतलब यह है कि अगर बिजली नहीं है तो आप अध्ययन नहीं कर सकते। यही नहीं जब आप मल्टीमीडिया सिस्टम के जरिए पढ़ाई करते हैं तो इसका मतलब यह है कि आप चीजों को बस समझ रहे हैं, लिखने की प्रैक्टिस नहीं कर रहे। लेकिन इम्तिहान देने का व्यावहारिक तरीका कम्प्यूटर का क्लिक दबाकर नहीं है बल्कि अभी भी इम्तिहान पास करने के लिए कॉपी के पन्ने रँगने पड़ते हैं। इसलिए पेपरलेस स्टडी में एक खतरा है कि अगर लिखने का अभ्यास छूट गया तो इम्तिहान पास करना मुश्किल भी हो सकता है।

गुमशुदा घर की तलाश

—डॉ० बच्चन सिंह

मेरा ख्याल है कि पहले-पहल घर की तलाश **केदारनाथ सिंह** की कविताओं में दिखाई पड़ती है—'उठता हाहाकार जिधर है / उसी तरफ अपना भी घर है।' 'उसने पृथ्वी पर खींच दी / एक गोल-सी लकीर / और कहा—'यह तुम्हारा घर है' / मैंने कहा—'ठीक, अब मैं यहीं रहूँगा' / गाय की खुरों को देख कर उसे रास्ता भी मिल जाता है। **अरुण कमल** के 'नये इलाके में' घर का मिलना आसान नहीं रह गया है। उस संग्रह की पहली कविता को देखें—'इन नये बसते इलाकों में / जहाँ रोज बन रहे हैं नये-नये मकान / मैं अक्सर रास्ता भूल जाता हूँ...अब यही उपाय है हर दरवाजा खटखटाओ / और पूछो— / क्या यही है वो घर?' एक दूसरी कविता है 'हाट'।'अट्टालिका थी लौह कपाट और द्वारपाल—/ यहाँ मेरा घर था मेरे पिता मेरी माँ / मेरा घर / ?'

राजेश जोशी 'दो पंक्तियों के बीच' में घर की याद है, संयुक्त परिवार की नियामत। गुमशुदा घर नहीं। 'चाँद की वर्तनी' उसकी कविताओं का पाँचवाँ संग्रह है। सबसे अलग—भाषा में, थीम में और उत्तर-आधुनिकतावाद के जीवन में। उसमें अरुण कमल की यूरोपिया नहीं है—'तब, खड़े होंगे करोड़ों-करोड़ एक साथ / और चलेंगे सब प्रकाश की ओर / ।' कविता में प्राय: लोग प्रकाश की ओर चलते हैं, वास्तव में, चलते हैं अन्धकार की ओर। जोशी की एक कविता है—'रैली में चलीं स्त्रियाँ।' उसकी कुछ पंक्तियाँ देखिए—'रैली में चलती स्त्री / जैसे ब्रह्माण्ड में अनथके चलती पृथ्वी को देखना है / ...उसकी आँख में असमय चला आया आँसू / उसकी हार का नहीं / उसके गुस्से का बाँध दरक जाने का संकेत है / ।' वह यूटोपिया नहीं है। बहुत कुछ अनकहा है। इसीलिए 'कवि का काम' में जोशी कहते हैं—'कि शब्द में लिखे जाने के बाद भी वह चुप ही लगे / इसके लिए बहुत महीन हुनर की जरूरत होती है / ।' कहना न होगा कि इस संग्रह में यह हुनर है। फ़िराक़ ने गुलेनग़मा में इसी ओर संकेत करते हुए कहा कि यह गुन मशक्कत के बाद मिलता है।

घर को बहुत व्यापक अर्थ में लिया गया है। चाहे बूढ़े को अपने घर जाना हो या युवा को। या स्वयं राष्ट्र को—सभी के घर या अस्मिता की पहचान खो गई है। आज का व्यक्ति उसी पहचान की तलाश में भटक रहा है। अनेक कविताएँ एक सीमा तक तादात्म्य स्थापित कर लेती हैं। पर जोशी पाठक के विचारार्थ एक प्रश्न भी फेंक देता है। 'रात किसी का घर नहीं।' इस कविता से एक हद तक उम्र के कारण मैं भी थोड़ा बहुत तादात्म्य कर लेता हूँ और मेरे मित्र पुरुषोत्तम मोदी भी। कविता की कुछ पंक्तियाँ उद्धृत करना जरूरी है। रात गए सड़कों पर अकसर एक न एक आदमी ऐसा जरूर मिल जाता है। / जो अपने घर का रास्ता भूल गया होता है। /....पर अपने घर जाना नहीं चाहता। /' अकसर एक बूढ़ा मिल जाता है। लड़कों ने उसे घर से निकाल दिया है। बच्चे उसे हर दिन पीटते हैं। पर अचानक वह भयभीत हो उठता है—'कि अब इस उम्र में वह कहाँ जा सकता है / वह चाहता है, मैं उसे लड़कों को समझाऊँ / कि लड़के उसे वापस घर में आने दें / कि वह एक कोने में चुपचाप पड़ा रहेगा / ...सब ठीक हो जायगा। बुदबुदाते हुए वह आगे चल देता है / ... मैं उस बूढ़े से पूछना चाहता हूँ / पर पूछ नहीं पाता / कि जिस तरफ वह जा रहा है / क्या उस तरफ उसका घर है? अन्तिम पंक्ति पूरी कविता को नए सिरे से पढ़ने की माँग करती है।'

'एक-से मकानों का नगर' में भी हम अपना घर ढूँढ़ नहीं पायेंगे—'एक दिन एकाएक हम अपने ही घर का नम्बर भूल जायेंगे / अपने ही शहर में अपना ही घर ढूँढ़ते हुए भटकेंगे / और अपना घर नहीं ढूँढ़ पायेंगे /' आज अपने शहर के पुराने चाय घर को जहाँ साहित्यकारों, राजनीतिज्ञों, कलाकारों का जमघट होता था, हम नहीं पहचानते।

बनारस पर बहुत सारी कविताएँ लिखी गई हैं। किन्तु जोशी के 'सुबहे बनारस' का क्या कहना। हर चीज का एक नज़रिया होता है, विज़न होता है। वह साइकिल रिक्शा से गोदौलिया आया—साँड़ों से बचते हुए। दशाश्वमेध की सीढ़ियाँ उतरते उसे एक मुहावरा याद आया। इसके आगे कुछ कहने की जरूरत नहीं थी। वह हर बनारसी की जुबान पर है। कविता में कुछ छोड़ा भी जाता है। उसने देखा 'अभी भी बहुत कुछ ऐसा था वहाँ / जो नहीं बदला था पुराना था जाना पहचाना था।' अपने पुराने पत्र के कारण जोशी को यह शहर पसन्द है। 'हमारे समय के बच्चे' फैंटेसी हैं, भयावह फैंटेसी। करीने से सजी चीजें उसे पसन्द नहीं हैं। अस्त-व्यस्त चीज़ों के बीच ही जीवन है...थोड़े फक्कड़ बेखबर से कवि / थोड़ी अनगढ़ और अस्त-व्यस्त-सी कविता /'

जोशी की भाषा भी थोड़ी खुरदुरी है—उसमें तराश नहीं। इसीलिए अच्छी लगती है। बिंब और प्रतीक तो एकदम अछूते हैं—

'तुमने देखा है कभी
बेटी के जाने के बाद का कोई घर?
जैसे बिना चिड़ियों की सुबह
जैसे बिना तारों का आकाश'।

स्मृति शेष

कहानीकार कहानी बन गया

'कहानीकार' पत्रिका के सम्पादक, पूर्व प्राचार्य, हरिश्चन्द्र स्नातकोत्तर महाविद्यालय **डॉ० कमलगुप्त** का शनिवार, 8 मई 2006 को रात्रि 11.30 बजे घासी टोला स्थित आवास पर निधन हो गया। डॉ० गुप्त एक दुर्घटना में घायल होने के बाद पिछले एक साल से चलने-फिरने में असमर्थ थे। वे 74 वर्ष के थे। उनके परिवार में पत्नी डॉ० कौशिल्या गुप्ता व एकमात्र पुत्र अरविन्द गुप्त हैं। अरविन्द जापानी भाषा के अनुवादक हैं और दिल्ली में रहते हैं। कमल गुप्त समर्पित साहित्यकार थे। 1967 से निजी साधनों से परिश्रमपूर्वक 'कहानीकार' का प्रकाशन अनवरत करते रहे।

स्कूटर, स्कूटर पर सवार, कश्मीरी टोपी पहने व्यक्ति कमल गुप्त 'कहानीकार' की पहचान थे। शहर के प्रत्येक साहित्यिक समारोहों में उनकी उपस्थिति और अंदाजे बयाँ उनकी अपनी शैली थी। काशी के साहित्यकारों को उन्होंने यथासम्भव प्रोत्साहित किया। डॉ० अलीम मसरूर उनकी ही पहचान थे। 'बहुत देर कर दी' प्रकाशित कर मसरूर को स्थापित किया। इस उपन्यास पर फिल्म भी बनी।

डॉ० कमल गुप्त का अध्यापन विषय इतिहास था किन्तु लिखते कहानी थे। लघुकथा और व्यंग्य लेखन उनकी विशिष्टता थी। काशी के साहित्य जगत में कमल गुप्त स्वयं कहानी बन गये। न कहानी रही न कहानीकार रहा। काशी का साहित्य समाज उन्हें भुला नहीं सकेगा, प्रतीक्षा करेगा कब कश्मीरी टोपी पहने अपनी अदा से कमल गुप्त सभा में उपस्थित हो जाँय और कहें—बस दो मिनट।

वाराणसी से 'कहानीकार' पत्रिका लगातार बाइस वर्षों से निकलती रही है जिसके यशस्वी सम्पादक डॉ० कमल गुप्त का दु:खद देहान्त अभी ही हुआ है। डॉ० कमल गुप्त एक फक्कड़ और कृति साहित्यकार थे। कहानी की तथाकथित मुख्यधारा से जूझते हुए भी वे कथा रचना को नेपथ्य से तलाश कर लाते और बाईस वर्षों तक लगातार रेखांकित करते रहे। **—कमलेश्वर**

संगोष्ठी/लोकार्पण

न तख्त दो न ताज दो
हमें नया समाज दो

''सही राह पर चलने के लिए आवश्यक है, दूर दृष्टि यानि विजन तथा इसके लिए आवश्यक है निरन्तर प्रयास अर्थात् संग्राम। नये समाज के गठन में कवियों की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है क्योंकि कवि का मानस युग की चुनौतियों से ओत-प्रोत होता है।'' **—जस्टिस श्यामलकुमार सेन**

अवसर था मनीषिका एवं श्री बड़ा बाजार कुमार सभा पुस्तकालय, कोलकाता का संयुक्त समारोह।

समारोह में सम्मिलित थे—अध्यक्ष गौरीशंकर कायाँ, मनीषिका संस्थापक अध्यक्ष पुष्करलाल केडिया, डॉ० प्रेमशंकर त्रिपाठी। 'सामाजिक चेतना काव्य मंजूषा' का लोकार्पण किया डॉ० कृष्णबिहारी मिश्र ने। विजय अग्रवाल ने प्रस्तुत किया प्रेरणा गीत—'न तख्त दो न ताज दो, हमें नया समाज दो।'

दो दिवसीय अखिल भारतीय संगोष्ठी

अखिल भारतीय साहित्य परिषद, भरतपुर एवं राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित साहित्यिक पत्रिकाओं के सम्पादकों की द्वि दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी (28-29 मार्च 2006) 'वैचारिक स्वराज्य : अवधारणात्मक विमर्श'।

स्वतंत्रता के बाद भी परिस्थिति में परिवर्तन नहीं हुआ, हमने विधान बनाने के लिए भी अपनी परम्परा की उपेक्षा की। हम अच्छे थे इसके प्रमाण के लिए भी हमें यूरोपियन्स के सर्टिफिकेट की आवश्यकता अनुभव करना शर्मनाक है। हमें अपनी भारतीयता पर गर्व होना चाहिए। लेकिन भारतीय विद्वानों में पश्चिम से तुलना की गलत मानसिकता उत्पन्न हो गई है। इससे विचारशून्यता और हिन्दी में मौलिक चिन्तन की कमी हो गयी। यह स्थिति साहित्य, दर्शन, राजनीतिशास्त्र और समाजशास्त्र सहित सभी विषयों में है। प्राचीन भारतीय संस्कृति में जो मौलिक चिन्तन हुआ है, वह स्वतंत्रता के बाद समाप्त-सा हो गया है।

—यशदेव शल्य

पश्चिम के विचार अर्थ सम्बन्धी अवधारणाओं पर आधारित है, जबकि भारतीय चिन्तन मानवीयता को दृष्टिगत रखते हुए किया गया है। भारत के हजारों वर्ष पहले 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का विचार पश्चिम से आया है 'ग्लोबल विलेज' के नाम से। लेकिन दोनों के दृष्टिकोण में अन्तर है। पहला मानवता पर आधारित है, जबकि दूसरा आर्थिक पहलू पर।

—कैलाशचन्द पंत

विश्व में यहूदी, क्रिश्चियन, इस्लाम के संघर्ष का तर्कसम्मत विवेचन करते हुए बताया कि यह सभ्यताओं का संघर्ष न होकर राज्य सत्ता का संघर्ष था। अब अमरीका और यूरोप का संघर्ष इस्लाम से है, कुछ हद तक चीन को भी वह प्रतिस्पर्धी मानता है, मार्क्सवाद उसके लिए अपदस्थ हो चुका है। आज भारतीय आदर्शों से प्रेरित सृजनशीलता को आगे बढ़ाते हुए उसी में से हमें मार्ग खोजना होगा।

—राजेश्वर मिश्र 'पंकज'

हमारे प्रतिमान उपेक्षित हैं, अपनी मौलिकता हमने छोड़ दी है, जिससे पश्चिमी अवधारणाओं को अग्रणी होने का अवसर मिला। हमें स्वातन्त्र्य व स्वराज्य के स्वबोध के साथ विश्व सभ्यताओं का इतिहास अपनी दृष्टि से लिखना होगा।

—मुकुन्द लाठ

सम्पूर्ण कार्यक्रम की परिकल्पना डॉ० कृष्णचन्द्र गोस्वामी ने की थी।

शब्दक्रम का लोकार्पण

डॉ० राधेश्याम शर्मा स्मृति संस्थान, जयपुर द्वारा प्रकाशित त्रैमासिक **शब्दक्रम** का लोकार्पण करते हुए साहित्य एवं संस्कृति मर्मज्ञ देवर्षि कलानाथ शास्त्री ने कहा—विद्वानों की नगरी जयपुर से साहित्य, संस्कृति एवं अध्यात्म की त्रैमासिक पत्रिका के प्रवेशांक की सामग्री का व्यापक फलक प्रभावित करता है।

डॉ० राधेश्याम शर्मा स्मृति संस्थान, जयपुर की त्रैमासिक पत्रिका 'शब्दक्रम' के प्रवेशांक का लोकार्पण करते हुए देवर्षि कलानाथ शास्त्री (मध्य में)। शास्त्रीजी के दायीं ओर हैं संस्थान के अध्यक्ष श्री राधेश्याम धूत एवं उनके बायें शब्दक्रम के संरक्षक डॉ० कृष्णगोपाल शर्मा। शास्त्रीजी के बायीं ओर शब्दक्रम के सम्पादक दुष्यन्त एवं युवा पत्रकार विरेन्द्र ढुंढ़ाड़ा।

इसमें प्रतिष्ठित हस्ताक्षरों की कविताएँ, कहानी, व्यंग्य, विचार, साक्षात्कार, समीक्षा, सचित्र परिचय आदि विविधवर्णी विषय सम्पादकीय कौशल को पहचान देते हैं। सर्जनात्मक साहित्य, सांस्कृतिक विमर्श और दार्शनिक चिंतन तीनों की त्रिवेणी है यह पत्रिका। एक आजीवन शब्दसाधक की स्मृति में शब्द-साधना का यह अर्घ्य एक अनुकरणीय सत्कार्य है।

शब्दक्रम के संरक्षक एवं राजस्थान विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग में एसोशिएट प्रोफेसर डॉ० कृष्णगोपाल शर्मा ने कहा कि स्व० डॉ० राधेश्याम शर्मा (पूर्व अध्यक्ष, राजस्थान साहित्य अकादमी एवं पूर्व विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय) के वृहद् एवं संस्कृतिनिष्ठ आदर्शों के अनुरूप साहित्यिक गतिविधियों को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से संस्थान की ओर से त्रैमासिक पत्रिका शब्दक्रम का प्रकाशन प्रारम्भ किया गया है।

संस्थान के अध्यक्ष एवं राजस्थान साहित्य अकादमी की सरस्वती सभा के सदस्य श्री राधेश्याम धूत ने कहा कि 'शब्दक्रम' के प्रवेशांक में प्रतिष्ठित साहित्यकारों की रचनाएँ पत्रिका के विशिष्ट स्तर की परिचायक हैं। पाठकों द्वारा स्तरीय साहित्यिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक पत्रिका की जो कमी महसूस की जा रही है, उसकी पूर्ति यह पत्रिका भलीभाँति करेगी।

पत्रिका का सम्पादन श्री दुष्यन्त ने किया है। प्रवेशांक के प्रमुख लेखक हैं—डॉ० इंदिरा गोस्वामी, नरेन्द्र कोहली, निदा फाजली, विजयदान देथा, यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र', डॉ० हरिराम आचार्य, ओम पुरोहित 'कागद', डॉ० के०के० रतू आदि।

नवगीत-विमर्श राष्ट्रीय संगोष्ठी

गुजरात हिन्दी सहित्य अकादमी के सौजन्य से पिछले दिनों गुजरात हिन्दी प्रचारिणी सभा तथा हिन्दी विभाग, महाराजा सायाजीराव यूनिवर्सिटी, बड़ौदा के संयुक्त तत्त्वावधान में नवगीत-विमर्श पर द्विदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित हुई जिसमें नईम (देवास), श्रीराम परिहार (खण्डवा), सोमठाकुर (आगरा), किसन सरोज (बरेली), शिवओम अम्बर (फर्रुखाबाद), देवव्रत जोशी (रतलाम), नरेन्द्र सिंह चौहान(देवास), बादाम सिंह रावत (मेहसाना), आलोक गुप्ता (अहमदाबाद), गिरीश त्रिवेदी (राजकोट), वेदप्रकाश अमिताभ (अलीगढ़) आदि के अतिरिक्त गुजरात के अनेक वरिष्ठ साहित्यकारों ने भाग लिया। हिन्दी विभाग, म०स० विश्वविद्यालय के अध्यक्ष प्रो० विष्णुविहार चतुर्वेदी के संयोजन में सम्पन्न यह नवगीत-विमर्श अत्यन्त समृद्ध वैचारिक विमर्श के साथ सम्पन्न हुआ। दूसरे दिन राष्ट्रीय कवि सम्मेलन में नाथद्वारा से पधारे वरिष्ठ हिन्दीसेवी श्री भगवतीप्रसाद देवपुरा का विशिष्ट सम्मान किया गया।

'क्या पता कॉमरेड मोहन' का लोकार्पण

कवि, कथाकार, उपन्यासकार एवं विज्ञानकर्मी संतोष चौबे के नये उपन्यास 'क्या पता कॉमरेड मोहन' का लोकार्पण विगत दिनों 'अंतरंग' भारत भवन, भोपाल में अनेक संस्कृतिकर्मियों, कवि, कथाकार व सामाजिक-राजनैतिक कार्यकर्ताओं की उपस्थिति में समारोहपूर्वक सम्पन्न हुआ। लोकार्पण समारोह का आयोजन सातवें 'रचना समय' कार्यक्रम के तहत मध्यप्रदेश

जनवादी लेखक संघ, पहले-पहल, सूत्रधार एवं रंगआधार द्वारा संयुक्त रूप से किया गया।

इस अवसर पर कवि-कथाकार एवं आलोचक डॉ० रमेश दवे ने कहा कि 'क्या पता कॉमरेड मोहन' आज और अभी का उपन्यास है। यह आत्म अर्जित अनुभवों की एक विराट सत्यकथा है। यह एक ऐसे उन्मेषशील, उत्साही और जनसेवा के ज़ज्बे से जुड़े युवक कार्तिक की कथा है जो अपनी समग्र बौद्धिकता के साथ संगठन से जुड़ता है, उसमें पूरी निष्ठा, संकल्प और समर्पण से काम करता है, समाज-सेवा के नये-नये आयाम खोज कर अपनी भूमिका को सक्रिय, सकारात्मक और सार्थक करने की कोशिश करता है किन्तु अन्त में संगठन के अन्तर्द्वन्द्व, अन्दर की राजनीति से टकरा-टकराकर निराश हो जाता है।

'भोजपुरी हृदयेश सतसई' लोकार्पित

श्रीकृष्ण राय हृदयेश खड़ी बोली के साहित्यकार होते हुए भी भोजपुरी साहित्य के प्रणेता हैं। यह भोजपुरी भाषा की पहली सतसई है। इसकी पुष्टि भोजपुरी के महान इतिहासज्ञ पण्डित गणेश चौबे ने की है। उक्त विचार ख्यातिलब्ध साहित्यकार डॉ० विवेकी राय के हैं। वे वाराणसी में श्रीकृष्ण राय 'हृदयेश' की कृति 'भोजपुरी हृदयेश सतसई' के लोकार्पण समारोह के अध्यक्ष पद को सम्बोधित कर रहे थे। श्री राय ने कहा कि हृदयेश पहले भोजपुरी से दूरी बनाकर रहते थे। इसके बावजूद उन्होंने भोजपुरी लिखा। इसका लोकार्पण भोजपुरी के विख्यात कवि चन्द्रशेखर मिश्र ने किया, और कहा कि जो लोग भोजपुरी के नाम पर नाक-भौं सिकोड़ते थे, वे अब इससे जुड़ने की कोशिश में हैं।

समीक्षक विश्वनाथ प्रसाद ने कहा कि हृदयेशजी की रचनाओं में सौन्दर्य बोध के साथ जीवन मूल्यों का निर्धारण भी है। उनके काव्य में व्यक्ति चेतना का दर्शन होता है। वह इतना वैयक्तिक भी नहीं है कि अपना आत्मसंघर्ष भी न दिखाई दे। लोकार्पण समारोह में काशी विद्यापीठ के हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो० रामकुँवर सिंह, प्रसिद्ध साहित्यकार डॉ० शुकदेव सिंह, बीएचयू के हिन्दी विभाग के प्रोफेसर डॉ० अवधेश प्रधान, डॉ० ऋचा राय आदि ने अपने-अपने विचार व्यक्त किये। स्वागत व संचालन विश्वविद्यालय प्रकाशन के प्रमुख पुरुषोत्तमदास मोदी तथा धन्यवाद हृदयेशजी के छोटे पुत्र ब्रह्मानन्द राय ने किया। इस समारोह के आरम्भ में डॉ० ऋचा राय ने हृदयेशजी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर विस्तार से प्रकाश डाला। अन्त में हृदयेश सतसई के दोहों पर संगीतमय पाठ किया गया।

'महाकवि पंत की सूक्तियाँ' लोकार्पित

महाकवि सुमित्रानन्दन पंत प्रकृति सौन्दर्य के साथ ही मानव महिमा के महान चितेरे हैं। उन्होंने भारत के पुरातन वैभव को नया रूप और आकार देकर उपस्थित किया। इलाहाबाद विश्वविद्यालय में अपने छात्र जीवन में पंतजी के साथ होने वाले प्रेरणादायक साक्षात्कारों का उल्लेख करते हुए तिवारीजी ने कहा कि उनकी रचनाएँ छात्रों में बहुत लोकप्रिय थीं। उत्तरांचल के मुख्यमंत्री **श्री नारायणदत्त तिवारी** ने अपने आवास पर वसन्त पंचमी की पूर्व सन्ध्या पर आयोजित एक भव्य समारोह में डॉ० गिरिजाशंकर त्रिवेदी द्वारा संकलित व सम्पादित पुस्तक 'महाकवि पंत की सूक्तियाँ' का लोकार्पण करते हुए कहा—इस उत्तम पुस्तक में पंतजी की काव्य कृतियों से चयनित उनके विचारों व जीवन दर्शन से सम्बन्धित सूक्तियों का चयन है। यह चयन न केवल छात्र-छात्राओं बल्कि साहित्य के अध्येताओं, विचारकों और अनुशीलनकर्ताओं के लिए अत्यन्त उपयोगी हैं। इस पुस्तक में जो संक्षिप्त और प्राणवान सामग्री है वह पंतजी के काव्य को समझने में सहायक है। इस अवसर पर उन्होंने पुस्तक की एक सूक्ति—"मैं विराट जीवन का प्रतिनिधि हूँ, मैं वन के / मर्मर से, युग के जन रव से परिचित हूँ। भौंरों का मधु गुंजन, कोयल का कल कूजन / मेरे ही स्वर हैं। स्वर्णातप मेरी स्मिति है।" की व्याख्या करते हुए कई बार पाठ किया। तिवारीजी ने पंतजी की एक कंठस्थ रचना 'नौका विहार' का अंश 'शान्त स्निग्ध ज्योत्स्ना उज्ज्वल, अपलक अनंत नीरव भूतल / सैकत शय्या पर दुग्ध धवल तन्वंगी गंगा ग्रीष्म विरल' का भी भावपूर्ण पाठ किया तथा साहित्य को राजनीति से ऊपर प्रतिष्ठित करते हुए उनकी सर्वग्राह्यता पर प्रकाश डाला।

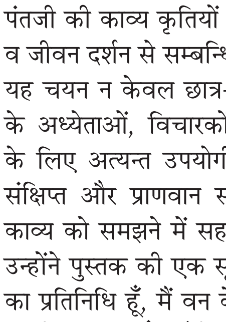

वैतरणी से वैश्वानर तक की यात्रा

आनन्दकुमार पाण्डेय

प्रथम संस्करण : 2006

ISBN : 81-7124-493-9

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

मूल्य : 190.00

पृष्ठ 1 का शेष

आज हैरी पाटर लोगों को लुभा रहा है। अंग्रेजी में उसके लाखों पाठक हैं, हिन्दी तथा भारतीय भाषाओं में उनके पाठकों की कमी नहीं है। क्या देवकीनंदन खत्री की रचनाएँ हैरी पाटर से कम रोचक हैं? कहावत है घर का जोगी जोगड़ा आन गाँव का सिद्ध।

इसका दुष्परिणाम देश झेल रहा है, विशेषकर युवावर्ग। संवेदनाशून्य युवा वर्ग अपसंस्कृति और अनैतिक कर्मों की ओर अग्रसर हो रहा है। साहित्य यानी पुस्तकें निर्जीव, निष्प्राण, हताश जीवन को जीवन्तता प्रदान करती हैं। निराशा में आशा का संचार, उत्साह और उल्लास का सृजन कर सद्कर्म की प्रेरणा प्रदान करती है। आज का युवक भटक गया है, दिशा प्रदान करने वाली पुस्तकों से उसका सम्बन्ध टूट गया है। साहित्य मानवी मनोवृत्तियों-अन्त:करणों को निर्देशित करता है। संघर्षों से जूझने की क्षमता प्रदान करती है। पुस्तकें निराशा में आशा का संचार करती है।

विश्वास है वह दिन आयेगा। जब विश्व के विकसित देश जहाँ टेलीविजन, कम्प्यूटर आदि की भरमार है; उन देशों में पुस्तक-पाठकों की विशाल संख्या है। एक-एक पुस्तक लाखों की संख्या में पढ़ी जाती हैं। विकासशील भारत को विकसित देश बनने के लिए अभी काफी मंजिल पूरी करनी है। अध्ययनशीलता ही भारतीय जनमानस को विकसित देश के निर्माण में अग्रसर करेगी। **—पुरुषोत्तमदास मोदी**

पुस्तकालयों, शिक्षा संस्थाओं

के लिए

साहित्यिक तथा विभिन्न विषयों की हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत पुस्तकों का विशाल संग्रह

तीन हजार वर्ग फुट में विशाल शोरुम

विश्वविद्यालय प्रकाशन

विशालाक्षी भवन, चौक

(चौक पुलिस स्टेशन परिसर के पार्श्व में)

वाराणसी – 221 001 (उ०प्र०)

Phone & Fax : (0542) 2413741, 2413082

E-mail: sales@vvpbooks.com

कथन

एनसीईआरटी और भारत का इतिहास

एनसीईआरटी भारत को इतिहासविहीन, संस्कृतिविहीन और बर्बर सिद्ध करने की यूरोपीय मानसिकता का अनुसरण कर रही है।

परिषद देश के मूलनिवासी आर्यों को विदेशी आक्रमणकारी बताती है, अरविंद घोष, भगत सिंह, विपिनचंद्र पाल, तिलक और लाला लाजपत राय को उग्रवादी। यानी भारत सभ्य राष्ट्र था ही नहीं, यह एक मामूली चारागाह है। यहाँ आर्य बाहर से आए, यवन आए, शक आए, हूण आए, कुषाण आए, तुर्क व अफगान आए, मुगल आए, अंग्रेज आए। विदेशी आते गए, काफिले बसते गए। इस इतिहास दृष्टि में विदेशी आक्रांताओं में आर्य सर्वाधिक बर्बर और असभ्य थे। गोमांस भक्षी थे। इतिहास के इस 'अपमान बोध' से कई सवाद पैदा हुए हैं। केन्द्र और उसकी एनसीईआरटी ऐसा इतिहास क्यों पढ़ाना चाहती है ?

—हृदयनारायण दीक्षित

शासक के रूप में समाज

मैकाले का रोना न रोकर यदि देश के अपढ़ को अपनी भाषा का अक्षर-ज्ञान कराने और प्राथमिक स्तर से राष्ट्रभाषा की शिक्षा प्रारम्भ की गई होती तो अब तक देश की एक सर्वमान्य राष्ट्रभाषा बन गई होती। 58 वर्ष पूर्व जनता के मन की स्लेट एकदम साफ थी। भाषा राजनीति के दुष्चक्र में नहीं फँसी थी। उस पर ए बी सी डी की जगह क ख ग घ आसानी से लिखा जा सकता था।

तमिल, तेलुगू, बंगला और गुजराती के साथ-साथ हिन्दी समान रूप से प्राथमिक शाला से पढ़ाई जाती तो अंग्रेजी का अपने आप अन्त हो जाता। लोग अपनी बोली भी बोलते और राष्ट्रभाषा भी। यही प्रयोग आर्थिक प्रगति प्राप्त करने, सामाजिक समता लाने, क्षेत्रीय भावना में राष्ट्रीय भावना भरने के सन्दर्भ में भी किया जाता तो आरक्षण, विशेषाधिकार, मजहबी उन्माद, भाषाई झगड़े और क्षेत्रीय उपराष्ट्रवाद की कल्पना तक न उपजती।

—भानुप्रताप शुक्ल

लेखन-प्रकाशन की विसंगति

यह इक्कीसवीं सदी की सच्चाई है कि हिन्दी इस समय विश्व की तीसरी सबसे बड़ी वाचिक भाषा है। इसी के बरक्स यह सच्चाई भी है कि दुनिया की सबसे बड़ी पिछड़ी भाषा के पाठकों के मुकाबले हिन्दी के पास उसकी एक तिहाई पाठक संख्या भी नहीं है। दरअसल, यह भयावह सच्चाई पेचीदा भी है और चौंकाने वाली भी। उन कुछ लेखकों को छोड़ दिया जाए जिनका अपना बड़ा पाठक वर्ग है, उनकी कोई भी पुस्तक प्रकाशन की प्रतीक्षा नहीं करती। प्रत्येक प्रकाशक उनके नाम की कोई भी पुस्तक तत्काल छाप देता है, वह प्रकाशक भी, जिसने उस लेखक का पाठक वर्ग बनाने में कोई मदद नहीं की है, क्योंकि वह लेखक सरकारी या गैर-सरकारी थोक खरीद में, अपने नाम के कारण आसानी से खप जाता है। एक अराजक किस्म का बाजार जरूर बन गया है, जो सरकारी और अर्द्ध-सरकारी स्तर पर पहुँच और सिफारिश के सहारे कमीशन के बल पर चलता है। प्रकाशन जगत में सहयोग राशि नाम की बीमारी अब महामारी के रूप में फैल चुकी है। हमारे कवि भी इसे अन्यथा न लें, पर अधिकांश कविता संकलन इसी सहयोग राशि के छप रहे हैं।

कविता कहानी लिखते हैं, प्रकाशकों के पीछे पड़ते हैं कि छाप दो। छपते ही उन्हें लगता है कि पुस्तक लाखों में बिक गई होंगी, पर प्रकाशक कहाँ से दे रायल्टी ? ....अपनी औकात सब जानते हैं, लेकिन मुगालता पालते हैं। **—कमलेश्वर**

आरक्षण क्यों

उच्च शिक्षण संस्थानों में शिक्षा का माध्यम हिन्दी कर दिया जाय तो दलितों, गरीबों और पिछड़ों के बच्चे भी प्रतिस्पर्द्धाओं में भाग ले सकें। वे आरक्षण इसलिए माँगते हैं क्योंकि इन संस्थानों की भाषा अंग्रेजी होने के कारण स्पर्द्धा में नहीं आ पाते; क्योंकि अंग्रेजी महँगे स्कूलों या कॉलेजों में पढ़ाई जाती है, जहाँ गरीब लोग अपने बच्चों को नहीं भेज पाते। **—स्वामी रामदेव**

समाज के कमजोर वर्ग के बच्चों को प्रारम्भ से ही अच्छी शिक्षा उपलब्ध कराई जाय। शिक्षण व्यवस्था सुधारी जाय और विद्यालयों की संख्या बढ़ाई जाय। प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए उन्हें प्रशिक्षण देने की भी व्यवस्था होनी चाहिए। शेष समाज के साथ बराबरी के स्तर पर वंचित वर्ग को लाना और उनमें प्रतियोगितात्मक क्षमता विकसित करना ही एकमात्र निदान है, फिर वह वर्ग किसी भी मजहब या जाति का क्यों न हो। क्या योग्यता संभ्रांत वर्ग की बपौती है ? **—बलबीर पुंज**

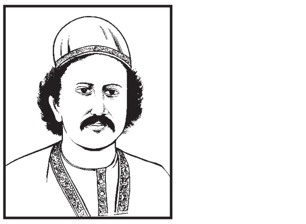

कौन अब पुस्तक छपाय पढ़वैहैं हाय,
राग रागिनी की रीति भाषत नितै गयो।
कोउ ना दिखात नेक हिन्दु में समझदार,
जैसी हरिश्चन्द्र केर कीरति छितै गयो॥
प्रेम के प्रवाह में बहनहार आछो, आज,
काल ग्राह तीखे दंत धोखे धरि लै गयो॥
कैसे नैन लखत सुस्याम घुंघरारे बार,
हाय 'नागरी' के नाथ छाड़ि कै कितै गयो॥

—हुस्नाबाई

(भारतेन्दु की मृत्यु पर)

कमल गुप्त

साहित्यिक न्यास थे।
हास-परिहास
कथा-कहानी
सबमें अपनी तरह के
काशी के इतिहास थे।
टोपी-पहचान थी
सफारी - ब्रीफकेश
वाणी में जान थी।
मुक्ताकाश
ऊँची-उड़ान
जिन्दगी जहान थी।
कहानीकार का जीवन
हार जाएगा मौत से
तेजाब आएगी
देह की सौत से।
मालूम न था-किसी को
खुद पता नहीं था, उन्हीं को
कारवां निकलेगा इतने जल्दी
जल्दी पड़ी है गंगा जली को।
खैर याद आओगे
स्वीकारो अन्तिम प्रणाम
ईश्वर दें शान्ति
स्मृतियों में बने रहो सुबह शाम।

—के० इन्द्रजीत

पोथियाँ

पोथियों में बहती ज्ञान गंगा में नहाइये
पल पल निर्मल प्राण होते जाइये।
हृदय सदय मन सुमन सजाइये
प्रज्ज्वलित मृदु दीपदान होते जाइये।
नीर-क्षीर के विवेक, लहरों के राजहंस
हँस हँस जीवन की तान होते जाइये।
सरस-सरोवर के 'वाङ्मय' शतदल
से सिंगार कर वरदान होते जाइये॥

—डॉ० रागिनी भूषण, जमशेदपुर

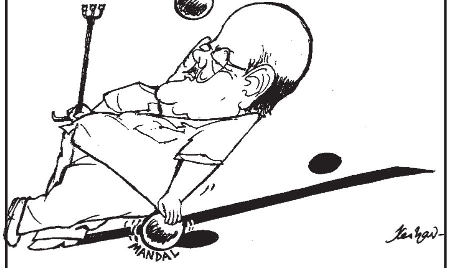

मैं शिक्षा के दूसरे पक्ष पर भी विचार करूँगा। मुझे प्रधानमंत्री तो बनने दीजिए।

'*द हिन्दू*' से साभार

यत्र-तत्र-सर्वत्र

विश्व में पुस्तक प्रकाशन

पुस्तक प्रकाशन के क्षेत्र में अब तक अमेरिका अग्रणी रहा है। किन्तु इधर के वर्षों में अमेरिका में प्रकाशित पुस्तकों की संख्या में भारी कमी आई है। पूर्व वर्ष 172,000 की तुलना में गत वर्ष (2005 में) 18,000 पुस्तकें कम प्रकाशित हुईं। 1999 के बाद यह कमी देखी जा रही है। गत 50 वर्षों में दसवीं बार यह स्थिति आई है। ब्रिटेन में गत वर्ष (2005 में) 2,06,000 नई पुस्तकें प्रकाशित हुईं। युवाओं और बच्चों के लिए पुस्तक प्रकाशन में गिरावट दर्ज की गई। दूसरी ओर जीवनचरित, धर्म, इतिहास, टेक्निकल विषयों की पुस्तकें भी कम प्रकाशित हुईं। विश्व में अमेरिका और ब्रिटेन में अंग्रेजी पुस्तकों के प्रमुख प्रकाशक हैं जिनकी पुस्तकें विश्व के सभी देशों में जाती हैं।

सोहनलाल द्विवेदी जन्मशती

वन्दना के इन स्वरों में एक स्वर मेरा मिला लो,
हो जहाँ बलि शीश अगणित एक सिर मेरा मिला लो

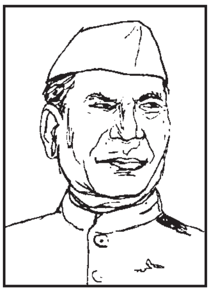

इन पंक्तियों के गायक राष्ट्रकवि पं० सोहनलाल द्विवेदी का यह जन्मशती वर्ष है। 22 फरवरी 1906 को बिन्दकी, फतेहपुर में उनका जन्म हुआ था। 1921 से उन्होंने लिखना प्रारम्भ किया। 1936-1942 तक लखनऊ के 'अधिकार' का सम्पादन किया। गाँधीजी पर केन्द्रित 'युगावतार' स्वतंत्रता संग्राम के लिए उत्प्रेरक 'भैरवी' आज भी स्मरणीय काव्य ग्रन्थ है। वासवदत्ता, कुणाल, पूजाजीत, युगाधार आपकी प्रमुख रचनाएँ हैं। 'बाँसुरी और झरना', 'दूध बताशा', 'हँस हँसाओं' आदि दर्जनों आपकी बाल साहित्य रचनाएँ हैं।

आपने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से एम०ए०, एल-एल०बी० की शिक्षा प्राप्त की। पं० हजारीप्रसाद द्विवेदी आपके सहपाठी थे।

2 अक्टूबर 1944 को महात्मा गाँधी के 77वें जन्म दिवस पर द्विवेदीजी ने स्व-सम्पादित 'गाँधी अभिनन्दन ग्रन्थ' भेंट किया था। इस ग्रन्थ में विभिन्न भारतीय भाषाओं में गाँधीजी पर लिखी रचनाएँ संगृहीत थीं। डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन् ने इस ग्रन्थ की भूमिका लिखी थी। 1969 में आप पद्मश्री से विभूषित किये गये।

काशी में 17 मई 2006 को भारतीय विद्या-अध्ययन केन्द्र ने महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ के कुलपति प्रो० सुरेन्द्र सिंह कुशवाहा की अध्यक्षता में जन्मशती समारोह का आयोजन किया। इस समारोह में डॉ० मनु शर्मा, डॉ० जितेन्द्रनाथ मिश्र, डॉ० विश्वनाथ प्रसाद, डॉ० केशरीनारायण त्रिपाठी तथा काशी के अन्य प्रमुख साहित्यकार सम्मिलित हुए।

चेन्नई में आयोजित हुआ महादेवी वर्मा जन्मशती समारोह

हिन्दी की अमर वाङ्मय विभूति एवं छायावाद की प्रशस्त कवयित्री महीयसी महादेवी वर्मा की जन्मशताब्दी रविवार, 7 मई 2006 को गोपालपुरम (चेन्नई) स्थित देशरत्न डॉ० राजेन्द्र बाबू भवन के सभागार में हिन्दी-तमिल के प्रतिष्ठित विद्वान् डॉ० एन० सुन्दरम की अध्यक्षता में आयोजित हुआ। समिति के संरक्षक एवं प्रसिद्ध समाजसेवी श्री शोभाकांतदास ने कवयित्री के चित्र पर पुष्पहार चढ़ाकर जन्मशती समारोहों का शुभारम्भ किया। समिति-अध्यक्ष डॉ० इंदरराज बैद ने आधुनिक युग की मीराँ के रूप में समाहत कवयित्री के महान् काव्यावदान को रेखांकित करते हुए कहा कि किस प्रकार महादेवी ने अज्ञात, अनाम और अरूप आराध्य की अनुरक्ति-भक्ति में स्वयं को समर्पित कर दिया था। लब्धप्रतिष्ठ साहित्यकार डॉ० बालशौरि रेड्डी ने अपने अनुशीलन-पत्र में महादेवी द्वारा प्रणीत गद्य-साहित्य की विस्तृत विवेचना करते हुए उनके जीवंत रेखाचित्रों एवं संस्मरणों के चुने हुए अंश प्रस्तुत किये। हिन्दी-मलयालम की विदुषी लेखिका डॉ० वत्सला किरण ने अपने निबन्ध में महादेवी के अनुपम प्रकृति-चित्रण पर प्रकाश डाला। सभापति-पद से अपने विचार व्यक्त करते हुए डॉ० एन० सुन्दरम ने महादेवी को उत्कृष्ट गद्य-लेखिका प्रमाणित करते हुए अपने एक संस्मरण द्वारा उनके रक्षिण-प्रेम की विशेष चर्चा की।

वाराणसी की सभी लाइब्रेरियों का नेटवर्क

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय (बीएचयू) की गायकवाड़ केन्द्रीय लाइब्रेरी में मौजूद सभी 12 लाख पुस्तकों की कम्प्यूटर बार कोडिंग की जाएगी और इनके बाबत संक्षिप्त विवरण केन्द्रीय कम्प्यूटर पर उपलब्ध होगा। न कैटलाग खंगालने की जरूरत और न ही यह चिन्ता कि किताब लाइब्रेरी की अलमारियों में है या कहीं किसी शिक्षक, शोधार्थी के घर की शोभा बढ़ा रही है। पुस्तकों के आवागमन की पूरी जानकारी लाइब्रेरी सूचना कम्प्यूटर का बटन दबाते ही हासिल हो जाएगी।

विश्वविद्यालय केन्द्रीय लाइब्रेरी के अलावा तीनों संस्थानों, 14 संकायों और सवा सौ विभागों की लाइब्रेरियों को तीन साल के भीतर केन्द्रीय लाइब्रेरी कम्प्यूटर नेटवर्क से जोड़ने जा रहा है। इसके लिए बीएचयू लाइब्रेरी को छह करोड़ रुपये मंजूर भी हो गये हैं। उन्होंने कहा कि बीएचयू प्रशासन की योजना तो वाराणसी के सभी विश्वविद्यालयों व अधिकाधिक शिक्षण संस्थानों का कम्प्यूटर लाइब्रेरी नेटवर्क निर्माण करने की भी है। इससे किसी भी शिक्षण संस्थान के विद्यार्थी और शोधार्थी अपनी लाइब्रेरी में बैठे-बैठे सर्व विद्या की राजधानी में मौजूद हर पुस्तक का ब्यौरा हासिल कर सकेंगे। यही नहीं बीएचयू को नब्बे साल की अवधि में मिली 12000 पाण्डुलिपियों के डिजिटल संस्करण भी तैयार किये जाएँगे। इनमें 800 साल से लेकर 200 साल तक पुरानी पाण्डुलिपियाँ शामिल हैं। इनकी हालत और दुर्लभ पुरातात्विक महत्त्व को ध्यान में रखकर, जिन्हें देखने-पढ़ने की अनुमति अभी नहीं है। इनमें से जिन पाँच सौ पुस्तकों का काम हाथ में लिया गया है उनको कम्प्यूटर के परदे पर दिखाने के लिए एक लाख पेज कम्पोजिंग करनी पड़ रही है। एक साल के भीतर यह सारा कम्प्यूटरीकरण कार्य पूरा कर लेने की योजना है। लाइब्रेरी वाचनालय की क्षमता 500 से बढ़ाकर 800 करने के लिए फर्नीचर प्रबन्ध, पुराने जीर्णशीर्ण फर्नीचर बदलने और हालों में नए पंखे लगाने का भी काम इसी वर्ष पूरा हो जाएगा।

800 साल पुरानी कपड़े की दुर्लभ पुस्तक

अहमदाबाद के लालभाई दलपतभाई संस्थान में हजारों दुर्लभ पाण्डुलिपियों के बीच 800 वर्ष पुरानी एक ऐसी पुस्तक भी है, जो पूरी तरह कपड़े की बनी है। 'धर्मविदि प्रकरण' शीर्षक वाली यह पुस्तक 1200 ईस्वी में लिखी गयी थी।

यह पुस्तक उस समय एक धार्मिक छात्र प्रभ सूरी ने लिखी थी। इस पुस्तक में भारत में जैन धर्म की स्थिति का वर्णन किया गया है। इस लिहाज से इस पुस्तक का ऐतिहासिक और धार्मिक दोनों तरह से काफी महत्त्व है। यह पुस्तक संस्थान में रखी करीब 70000 दुर्लभ पुस्तकों व पाण्डुलिपियों का एक हिस्सा है। यह उन कुछ कपड़े की किताबों में शामिल है, जो इस समय सुरक्षित व संरक्षित हैं। तीन सौ पृष्ठों की इस पुस्तक में लिखी गयी भाषा संस्कृत है। मूलतः इस पुस्तक का रंग सफेद था, लेकिन समय गुजरने के साथ ही अब यह पूरी तरह पीली पड़ चुकी है। पुस्तक की लम्बाई करीब 3.5 फुट और मोटाई चार इंच है। पुस्तक विशेष प्रकार की स्याही से लिखी गयी है, जिसका प्रयोग उस समय के छात्र पाण्डुलिपि लिखने के लिए करते थे।

प्रवासी लेखक

यदि व्यापक दृष्टि से देखा जाए, तो हिन्दी ही नहीं, विश्व की सभी सम्पन्न भाषाओं के लेखक प्रवासी ही हैं। हिन्दी क्षेत्र से बाहर जो हिन्दीभाषी हिन्दी के रचनाकार तमिलनाडु, केरल, आन्ध्र प्रदेश, महाराष्ट्र, उड़ीसा या अन्य प्रदेश में बसे हैं वे

भी तो प्रवासी हिन्दी लेखक ही हैं। मैं तो यहाँ तक कहूँगा कि भारतीय ग्रामीण संस्कृति की अस्मिता को निगलती हुई नागर संस्कृति में बसे लेखक भी प्रवासी ही हैं। अपना परिवेश छोड़कर आए इन लेखकों के अन्तर्द्वन्द्व, इनकी समस्याएँ किसी प्रकार भी उन लेखकों से कम नहीं हैं, जो विदेशों में बसे हैं। वैश्वीकरण के इस युग में, जब बॉलीवुड के माध्यम से पश्चिम की निकृष्टतम काल्पनिक संस्कृति भारत के घर-घर में परोसी जा रही हो, सभी महानगर समीप ही आ रहे हैं, नागर संस्कृति की विभीषिका से कोई भी सुरक्षित नहीं है।

—डॉ० वेदप्रकाश 'बटुक'

अखिल भारतीय साहित्य परिषद, राजस्थान डॉ० कुलश्रेष्ठ प्रदेशाध्यक्ष

अखिल भारतीय साहित्य परिषद, राजस्थान की सत्र 2006-2009 के लिए डॉ० मधुरेशनन्दन कुलश्रेष्ठ पुनः राजस्थान प्रदेशाध्यक्ष निर्वाचित किए गये। प्रदेश कार्यकारिणी के लिये चुने गए नाम इस प्रकार हैं—श्री राधेश्याम धूत (जयपुर), डॉ० रमेशचन्द्र शर्मा (जयपुर), श्रीराम लक्ष्मण गुप्ता (जयपुर), डॉ० विजय नागपाल (कोटपूतली), श्री रमेशकुमार शर्मा (बीकानेर), डॉ० मधुरेशनन्दन कुलश्रेष्ठ (जयपुर), डॉ० दयाकृष्ण विजय (कोटा), श्री रामस्वरूप रावतसरे (शाहपुरा), श्री शिवशंकर सुमन (झालावाड़), श्री विष्णु शर्मा (कोटा), श्री प्रद्युम्न वर्मा (बाराँ), श्री कन्हैयालाल शर्मा (बाराँ), डॉ० मधुमुकुल चतुर्वेदी (सवाई माधोपुर), डॉ० इन्दुशेखर 'तत्पुरुष' (गंगापुर सिटी), डॉ० श्रीमती गीता सक्सेना (कोटा), श्री रविकान्त मणि (जयपुर), श्री जगदीशप्रसाद माली (सीकर), श्री प्रभात शर्मा (झुंझुनू), श्री रमेश शास्त्री (सीकर), श्री मोहनलाल वर्मा (डीडवाना), श्री जगजितेन्द्र सिंह (भीलवाड़ा)।

नीरजा माधव की 'गेशे जम्पा' पर संगोष्ठी

'गेशे जम्पा' तिब्बत के इतिहास, संस्कृति व आजादी के जलते सवालों को उठाने वाला हिन्दी का पहला उपन्यास है। इसमें तिब्बत की परम्परा, रीति-रिवाज, रहन-सहन के साथ-साथ भौगोलिक स्वरूप का मार्मिक वर्णन किया गया है। यह उपन्यास तिब्बतियों को नयी दिशा दे सकता है। ये विचार थे सारनाथ स्थिति केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान में उपन्यास पर आयोजित समीक्षा संगोष्ठी में साहित्यकारों के। मुख्य अतिथि प्रो० त्रिभुवन सिंह ने कहा कि उपन्यास की रचयिता डॉ० नीरजा माधव ने तिब्बत के लुटते बच्चों के प्यार की संवेदना को उकेरा है लेकिन इसमें करुणा को क्रोध में बदलने की जरूरत है, ताकि वहाँ उन्मुक्त माहौल बन सके। मुख्य वक्ता डॉ० विश्वनाथप्रसाद ने कहा कि उपन्यास में राग तत्त्व है जो मनुष्य को मनुष्य से बाँधता है। प्रो० नवांग समतेन ने कहा कि 'गेशे जम्पा' कृति तिब्बत के आन्दोलन को नया स्वर देती है। इस अवसर पर डॉ० बृजबाला सिंह ने कहा कि लेखिका ने उपन्यास के माध्यम से वैश्विक चुप्पी तोड़ने का प्रयास किया है जिस पर राजनीतिक खेमा मौन है।

संगोष्ठी में प्रो० शुकदेव सिंह, प्रो० चौथीराम यादव, प्रो० मंजुला चतुर्वेदी, प्रो० पी०के० पाण्डेय, डॉ० रामसुधार सिंह, प्रो० रमाशंकर शुक्ल, डॉ० रमेश पाण्डेय, डॉ० गुरूचरण सिंह ने विचार व्यक्त किये। संचालन डॉ० बेनीमाधव ने किया।

अब प्रोफेसरों को छात्र देंगे नम्बर

गुरुजी कैसा पढ़ाते हैं, कितना पढ़ाते हैं और कैसे पढ़ाते हैं—इन सब का मूल्यांकन अब कोई और नहीं बल्कि उनके शिष्य ही करेंगे। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में शैक्षणिक माहौल की गुणवत्ता के लिए कुलपति ने यह नई पहल की है। इसके तहत शिक्षकों की चरित्र पंजिका (सीआर) अब छात्र लिखेंगे। यह व्यवस्था नये शैक्षिक सत्र 2006-07 से लागू होगी।

छात्रों को कुल दस बिन्दुओं पर अध्यापकों का मूल्यांकन करना है। यह मूल्यांकन विषयवार होगा। इसके तहत शिक्षकों की प्रस्तुतीकरण क्षमता, विषय के बारे में समझाने की क्षमता, शिक्षकों की नियमित रूप से कक्षाओं में उपस्थिति, ब्लैक बोर्ड पर प्रस्तुतीकरण, विषय के बारे में शिक्षकों की समझ, सोचने की क्षमता को विकसित करने में शिक्षकों की दक्षता, कोर्स पूरा करने की क्षमता, सामान्य ज्ञान की जानकारी, प्रेरणा देने के सम्बन्ध में क्षमता तथा प्रश्न पूछने पर प्रोत्साहित करने सम्बन्धी बिन्दुओं पर मूल्यांकन करना है। छात्रों को प्रोफार्मा पर यह भरना है कि शिक्षकों की दक्षता औसत है अथवा अच्छा या बहुत अच्छा या फिर एक्सीलेंट। यह मूल्यांकन 50 अंकों का होगा। इसके अलावा छात्रों को अपनी रिपोर्ट में यह भी बताना होगा कि टेस्ट के रिजल्ट दो सप्ताह में घोषित हुए या नहीं। पर्याप्त एसाइनमेंट दिए गए या नहीं। छात्रों को यह भी बताना है कि उनके विचार में इस विषय का पाठ्यक्रम पर्याप्त है अथवा अपर्याप्त। छात्रों को पाठ्यक्रम, विषय तथा सुविधाओं के विषय में सुझाव देने को भी कहा गया है।

विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार की ओर से हाल ही में सभी संस्थानों, संकायों व विभागों को आदेश तथा मूल्यांकन के प्रोफार्मा भेजे गए हैं। उनसे कहा गया है कि सभी छात्रों को शैक्षिक सत्र शुरू होने के साथ ही यह प्रोफार्मा दे दिया जाए। सेमेस्टर या वर्ष के अन्त में वे प्रोफार्मा को भरकर सौंपेंगे। इसके साथ ही सभी अध्यापक स्वयं मूल्यांकन रिपोर्ट भी जमा करेंगे। दोनों रिपोर्ट विभागाध्यक्ष के पास जमा की जाएगी। यहाँ से संकाय प्रमुख, निदेशक स्तर से होते हुए दोनों रिपोर्ट वाइसचांसलर के समक्ष प्रस्तुत की जाएगी। इन दोनों रिपोर्टों के आधार पर अध्यापकों का मूल्यांकन होगा। छात्रों का मूल्यांकन प्रोफार्मा एक पेज का है जबकि शिक्षकों का आठ पेज का।

जर्मन पुरातत्त्वविद् फ्रेडपिन का दुर्लभ संकलन भारत कला भवन में

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के भारत कला भवन को डॉ० ओमप्रकाश केजरीवाल केन्द्रीय सूचना आयोग आयुक्त ने जर्मन पुरातत्त्वविद फ्रेडरिक माइकल जॉन पिन के ब्रिटिशकालीन भारतीय इतिहास से सम्बद्ध अनेक पाण्डुलिपियाँ, नक्शे, मूर्तिशिल्प, पुस्तकें, कलर स्लाइड प्रदान किया जिन्हें कला भवन की वीथिका में सुसज्जित किया गया है। वीथिका में लगभग 3200 से अधिक पुस्तकें, 29 पाण्डुलिपि, 23 पेंटिंग जिसमें गुजरात शैली में 19वीं शताब्दी में बनायी गयी पेंटिंग मधु-मालती, बंगाली शैली में बनी बेहुला—लक्षेदर पाटा व मनसा मंगला आदि प्रमुख हैं। इनके अतिरिक्त 164 नक्शे, 7800 स्लाइड भी हैं। ब्रिटिशकालीन भारतीय इतिहास के शोध के लिए यह अमूल्य निधि है।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल स्मृति चर्चा

नामवर सिंह ने आचार्य शुक्ल की जन्मभूमि अगौना (बस्ती) उत्तर प्रदेश जाकर और वहाँ की मिट्टी माथे लगाकर कहा—''जिस महान विभूति पर पिछले 50 वर्ष से लिखता और चर्चा करता रहा हूँ, उसकी जन्मभूमि की मिट्टी मस्तक पर लगाने का आज सौभाग्य मिला है। आज हिन्दी में मैं उन्हें ही 'आचार्य' मानता हूँ, कोई दूसरा आचार्य नहीं हुआ, मेरे गुरु हजारीप्रसाद द्विवेदी भी नहीं।''

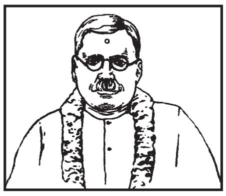

इसी क्रम में गोरखपुर में दैनिक जागरण तथा अनामिका प्रकाशन द्वारा आयोजित संवाद 2006 में कहा—''हमारे विचारों में उपनिवेश का रोग लग गया है, इसलिए हम अपनी संस्कृति की बजाए यूरोप की ओर झाँकने लगते हैं।''

भारतीय भाषाओं का भविष्य

वैश्वीकरण के इस युग में भारतीय भाषाएँ सर्वाधिक प्रभावित हो रही हैं। आज सबसे कम विद्यार्थी हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं में प्रवेश ले रहे हैं। योग्य विद्यार्थी अंग्रेजी पढ़ रहे हैं या अन्य विदेशी भाषा। इलेक्ट्रानिक मीडिया के हिन्दी में प्रवेश से यह आशा बँधी थी कि अब देश के उद्योग-व्यवसाय और मीडिया में हिन्दी अंग्रेजी का विकल्प बन जायगी। किन्तु ऐसा नहीं हो रहा। इस पर गम्भीरतापूर्वक विचार करने की

प्रमुख पाठ्य-ग्रन्थ

इतिहास, कला और संस्कृति

Ancient Indian Administration & Penolgy
Paripurnanand Verma 300.00
Studies in Indian Art *Dr. V.S. Agrawal* 400.00
Hinduism and Buddhism *Dr. Asha Kumari* 200.00
प्राचीन भारतीय शासन-पद्धति *प्रो० अनंत सदाशिव अलतेकर* 150.00
प्राचीन भारतीय राजनीतिक विचारधारा *डॉ० लल्लनजी गोपाल* 150.00
प्राचीन भारतीय समाज और चिन्तन *डॉ० चन्द्रदेव सिंह* 150.00
प्राचीन भारतीय कला में मांगलिक प्रतीक
डॉ० विमलमोहनी श्रीवास्तव 200.00
प्राचीन भारत में यक्ष पूजा *डॉ० कमलेश दूबे* 250.00
आसन एवं योग मुद्राएँ (प्राचीन भारत में शरीर-साधना की पद्धति)
डॉ० रविन्द्रप्रताप सिंह 250.00
खजुराहो की मूर्तिकला के सौन्दर्यात्मक तत्त्व *डॉ० सुश्री शरद सिंह* 400.00
पूर्व मध्यकालीन जैनकला *डॉ० अवधेश यादव* (यंत्रस्थ)
मध्यकालीन भारतीय मूर्तिकला *डॉ० मारुतिनन्दनप्रसाद तिवारी*
डॉ० कमल गिरि 100.00
मध्यकालीन भारतीय प्रतिमालक्षण '' 325.00
(7वीं शती से 13वीं शती)
प्राचीन भारतीय प्रतिमा-विज्ञान एवं मूर्ति-कला
डॉ० ब्रजभूषण श्रीवास्तव 140.00
भारतीय संग्रहालय एवं जनसम्पर्क *डॉ० आर० गणेशन्* 250.00
विश्व की प्राचीन सभ्यताएँ *डॉ० श्रीराम गोयल* 120.00
ग्रीक-भारतीय (अथवा यवन) *प्रो० ए०के० नारायण* 300.00
प्राचीन भारत *डॉ० राजबली पाण्डेय* 180.00
गुप्त साम्राज्य *डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त* 350.00
गुप्तयुगीन केन्द्रीय प्रशासन *डॉ० सीमा मिश्रा* 280.00
प्राचीन भारत के प्रमुख अभिलेख [खण्ड-1 : मौर्य-काल से कुषाण (गुप्त-पूर्व) काल तक] *डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त* 100.00
प्राचीन भारत के प्रमुख अभिलेख '' 80.00
[खण्ड-2 : गुप्त-काल 319-543 ई०]
भारतीय वास्तु-कला *डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त* 100.00
भारत के पूर्व-कालिक सिक्के *डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त* 170.00
हमारे देश के सिक्के *डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त* 15.00
प्राचीन भारतीय मुद्राएँ *डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त* 45.00
गुप्तोत्तरकालीन उत्तर भारतीय मुद्राएँ *डॉ० ओंकारनाथ सिंह* 70.00
(600 से 1200 ई०)
प्राचीन भारतीय कला एवं वास्तु *डॉ० पृथ्वीकुमार अग्रवाल* 450.00
बौद्ध तथा जैनधर्म (धम्मपद और उत्तराध्ययन सूत्र का एक तुलनात्मक अध्ययन) *डॉ० महेन्द्रनाथ सिंह* 180.00
बौद्ध एवं जैन-धर्म तथा दर्शन *डॉ० सत्यनारायण दूबे 'शरतेन्दु'* 90.00
सनातन हिन्दू धर्म और बौद्ध धर्म *डॉ० श्यामसुन्दर उपाध्याय* 75.00
बुद्धकालीन सामाजिक-आर्थिक जीवन [सुत्तपिटक के विशेष सन्दर्भ में]
डॉ० अखिलेश्वर मिश्र 180.00
प्राचीन भारतीय पुरातत्त्व, अभिलेख एवं मुद्राएँ *डॉ० नीहारिका* 150.00
शुंगकालीन भारत *सच्चिदानन्द त्रिपाठी* 50.00
चालुक्य और उनकी शासन-व्यवस्था *डॉ० रेणुका कुमारी* 60.00
कम्बुज देश का राजनैतिक और सांस्कृतिक इतिहास
डॉ० महेशकुमार शरण 175.00
गाहड़वालों का इतिहास (1089-1196) *डॉ० प्रशान्त कश्यप* 220.00
देवभूमि उत्तराखण्ड : इतिहास एवं संस्कृति (खण्ड-1)
डॉ० गिरिराज शाह (यंत्रस्थ)
इतिहास दर्शन *डॉ० झारखण्डे चौबे* 150.00
दिल्ली सल्तनत (तराइन से पानीपत 1911-1526 ई०)
डॉ० गणेशप्रसाद बरनवाल 50.00
सल्तनतकालीन सरकार तथा प्रशासनिक व्यवस्था
डॉ० ऊषारानी बंसल 50.00
मुगल कालीन सरकार तथा प्रशासनिक संरचना '' (यंत्रस्थ)
काशी का इतिहास *डॉ० मोतीचन्द्र* 650.00
एक विश्व एक संस्कृति *राष्ट्रिय पण्डित श्री व्रजवल्लभ द्विवेदी* 150.00

समाजशास्त्र, धर्म तथा दर्शन

भारत में जातिप्रथा और दलित ब्राह्मणवाद *बच्चन सिंह* 180.00
सिख धर्म और संस्कृति *डॉ० अमरसिंह वधान* 120.00
गांधीवाद : विविध आयाम *डॉ० सतीश कुमार* 120.00
जनोपनिषद *भरत गांधी* 200.00
भारतीय दर्शन : सामान्य परिचय (सांख्य, योग, वेदान्त, बौद्ध एवं जैन दर्शन) *राष्ट्रिय पण्डित श्री व्रजवल्लभ द्विवेदी* 60.00
भारतीय संस्कृति के मूलतत्व '' 60.00
(संस्कार, वर्णाश्रम व्यवस्था, पुरुषार्थ-चतुष्टय)
धर्म, दर्शन और विज्ञान में रहस्यवाद *प्रो० कल्याणमल लोढ़ा*
डॉ० वसुन्धरा मिश्र 250.00
दर्शन, धर्म तथा समाज *राजाराम शास्त्री* 350.00
समाज-दर्शन की भूमिका *डॉ० जगदीशसहाय श्रीवास्तव* 150.00
बौद्ध तथा जैनधर्म *डॉ० महेन्द्रनाथ सिंह* 180.00
बौद्ध एवं जैन-धर्म तथा दर्शन *डॉ० सत्यनारायण दूबे 'शरतेन्दु'* 90.00
भारतीय राष्ट्रवाद : स्वरूप और विकास *सम्पा. : डॉ० सत्येन्द्र त्रिपाठी* 60.00
एक विश्व : एक संस्कृति *राष्ट्रीय पण्डित श्री व्रजवल्लभ द्विवेदी* 150.00
भारतीय समाज एवं संस्कृति : परिवर्तन की चुनौती
सम्पा० : सत्यप्रकाश मित्तल 380.00
समाजशास्त्र *मॉरिस गिन्सबर्ग* 25.00
सामाजिक जनांकिकी *नीलकंठ शा० देशपांडे* 80.00
अपराध के नये आयाम तथा पुलिस की समस्याएँ *परिपूर्णानन्द वर्म्मा* 50.00
पुलिसकर्मियों की समस्याएँ : समाजवैज्ञानिक अध्ययन
डॉ० विजयप्रताप राय 300.00
सामाजिक व्यवस्था में पुलिस की भूमिका *चमनलाल प्रद्योत* 40.00
अरविंद-दर्शन की भूमिका *एस०के० मैत्रा* 30.00
श्री अरविंद की साहित्य-चिंतना *डॉ० शिवनाथ* 160.00
सोमतत्त्व *प्रो० कल्याणमल लोढ़ा* 100.00
वेद व विज्ञान *स्वामी प्रत्यगात्मानन्द सरस्वती* 180.00
काशी में मोक्षकामी प्रवासी विधवाएँ (समाजशास्त्रीय अध्ययन)
सत्यप्रकाश मित्तल, रामलखन मौर्य, प्रस्तावना : डॉ० बैद्यनाथ सरस्वती 200.00
विकासवाद और श्री अरविन्द *डॉ० जयदेव सिंह* 20.00
Modern Indian Mysticism (3 Vols.) *Sobharani Basu* 250.00

शिक्षा तथा मनोविज्ञान

प्रारम्भिक शिक्षा के मूलभूत तत्त्व *डॉ० प्रवीणचन्द्र श्रीवास्तव* 120.00
भौतिक में विज्ञान-शिक्षण *डॉ० प्रवीणचन्द्र श्रीवास्तव* 150.00
नवीन शिक्षा मनोविज्ञान *डॉ० के०पी० पाण्डेय* 150.00
शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक आधार *डॉ० के०पी० पाण्डेय* 150.00
शैक्षिक अनुसंधान *डॉ० के०पी० पाण्डेय* 100.00
पर्यावरण शिक्षा एवं भारतीय सन्दर्भ *डॉ० के०पी० पाण्डेय, डॉ० अमिता भारद्वाज, डॉ० आशा पाण्डेय* 150.00
शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी *डॉ० के०पी० पाण्डेय* 120.00
Advanced Educational Psychology *Dr. K.P. Pandey* 200.00
Fundamentals of Educational Research ” 250.00
Educational and Vocational Guidance in India ” 250.00
Teaching of English in India *Dr. K.P. Pandey, Dr. Amita* 150.00
The Educational Philosophy of W.H. Kilpatrick *Pratibha Khanna* 300.00
शैक्षिक तकनालॉजी के आयाम *डॉ० राजेश्वर उपाध्याय, डॉ० सरला पाण्डेय* 80.00
संसार के महान शिक्षाशास्त्री *डॉ० इन्द्रा ग्रोवर* 60.00
महान् शिक्षाशास्त्रियों के सिद्धान्त *आर०आर० रस्क* 80.00

पत्रकारिता

जनसंचार : सिद्धान्त एवं भाषा विमर्श *डॉ० अवधेश नारायण मिश्र, राजेशनारायण द्विवेदी* (यंत्रस्थ)
सम्प्रेषण और रेडियो-शिल्प *विश्वनाथ पाण्डेय* 250.00
रेडियो का कला पक्ष *डॉ० नीरजा माधव* 40.00
सम्पूर्ण पत्रकारिता *डॉ० अर्जुन तिवारी* 280.00
आधुनिक पत्रकारिता (परिवर्धित संस्करण) *डॉ० अर्जुन तिवारी* 120.00
इतिहास निर्माता पत्रकार *डॉ० अर्जुन तिवारी* 60.00
हिन्दी पत्रकारिता (भारतेन्दु पूर्व से छायावादोत्तर काल तक) *डॉ० धीरेन्द्रनाथ सिंह* 50.00
संसद और संवाददाता (संसदीय रिपोर्टिंग) *ललितेश्वरप्रसाद श्रीवास्तव* 120.00
समाचार और संवाददाता *काशीनाथ गोविन्द जोगलेकर* 80.00
संवाद-संकलन-विज्ञान *नारायण व्यंकटेश दामले* 50.00
हिन्दी पत्रकारिता का नया स्वरूप *बच्चन सिंह (पत्रकार)* 200.00
हिन्दी पत्रकारिता का नये प्रतिमान *बच्चन सिंह* 40.00
पत्र, पत्रकार और सरकार *काशीनाथ गोविन्द जोगलेकर* 120.00
प्रेस विधि *डॉ० नन्दकिशोर त्रिखा* 100.00
'स्वदेश' की साहित्य-चेतना *डॉ० प्रत्यूष दुबे* 150.00
पत्र प्रकाशन और प्रक्रिया *शिवप्रसाद भारती* 200.00
आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी और साहित्यिक पत्रकारिता *डॉ० इन्द्रसेन सिंह* 120.00
The Rise and Growth of Hindi Journalism (1826-1945) *Dr. R.R. Bhatnagar, Ed. by: Dr. Dhirendra Nath Singh* 800.00
Mass Communication & Development *(Ed.) Dr. Baldev Raj Gupta* 250.00
Journalism by Old and New Masters *(Ed.) Dr. Baldev Raj Gupta* 250.00
Modern Journalism & Mass Communication *(Ed.) Dr. Baldev Raj Gupta* 250.00

संस्कृत-साहित्य

प्रारम्भिक रचनानुवाद कौमुदी *डॉ० कपिलदेव द्विवेदी* 18.00
रचनानुवाद कौमुदी *डॉ० कपिलदेव द्विवेदी* 50.00
प्रौढ-रचनानुवाद कौमुदी *डॉ० कपिलदेव द्विवेदी* 100.00
संस्कृत-व्याकरण एवं लघुसिद्धान्त कौमुदी (सम्पूर्ण) ” 170.00
संस्कृत-निबन्ध-शतकम् *डॉ० कपिलदेव द्विवेदी* 80.00
भाषा-विज्ञान एवं भाषा-शास्त्र *डॉ० कपिलदेव द्विवेदी* 120.00
अर्थ विज्ञान और व्याकरण दर्शन *डॉ० कपिलदेव द्विवेदी* 400.00
वैदिक साहित्य एवं संस्कृति *डॉ० कपिलदेव द्विवेदी* 125.00
सिद्धान्त-कौमुदी (कारक प्रकरणम्) *ज्योतिस्वरूप मिश्र, उर्मिला मोदी* 20.00
पाणिनीय शिक्षा ('प्रभावती' हिन्दी व्याख्या संवलिता) *डॉ० कमलाप्रसाद पाण्डेय* 24.00
रसों की संख्या *डॉ० वी० राघवन* 180.00
पण्डितराज जगन्नाथ-प्रणीत भामिनी विलास का प्रास्ताविक-अन्योक्तिविलास (सटीक) *सं०पं० जनार्दन शास्त्री पाण्डेय* 50.00
चन्द्रालोकः (1 से 4 मयूख) *डॉ० भारतेन्दु द्विवेदी* 40.00
अभिनव रस सिद्धान्त *डॉ० दशरथ द्विवेदी* 40.00
अभिनव का रस-विवेचन *नगीनदास पारेख* 100.00
वक्रोक्तिजीवितम् *डॉ० दशरथ द्विवेदी* 100.00
रसाभिव्यक्ति *डॉ० दशरथ द्विवेदी* 150.00
दशरूपकम् *डॉ० रमाशंकर त्रिपाठी* 150.00
ध्वन्यालोकः (दीपशिखा टीका सहित पूर्णतया संशोधित परिवर्धित) *आचार्य चण्डिकाप्रसाद शुक्ल* 200.00
मृच्छकटिकः शास्त्रीय, सामाजिक एवं राजनीतिक अध्ययन *डॉ० शालग्राम द्विवेदी* 100.00
उपरूपकों का उद्‌भव और विकास *डॉ० इन्द्रा चक्रवाल* 100.00
संस्कृत नाटकों में शौरसेनी (कालिदास और राजशेखर के संस्कृत नाटक) *डॉ० श्रीरंजन सूरिदेव* 30.00
संस्कृत के प्रतीकात्मक नाटक *डॉ० आशारानी त्रिपाठी* 225.00
संस्कृत साहित्य का अभिनव इतिहास *डॉ० राधावल्लभ त्रिपाठी* 200.00
संस्कृत साहित्य की कहानी *उर्मिला मोदी* 50.00
भाषा-विज्ञान एवं भाषा-शास्त्र *डॉ० कपिलदेव द्विवेदी* 120.00
संस्कृत का भाषाशास्त्रीय अध्ययन *डॉ० भोलाशंकर व्यास* 80.00
वैद व विज्ञान *स्वामी प्रत्यगात्मानन्द सरस्वती* 180.00
वेदचयनम् *विश्वम्भरनाथ त्रिपाठी* 60.00
ऋङ्मणिमाला *डॉ० हरिदत्त शास्त्री* 45.00
ऋग्वेदभाष्यभूमिका *डॉ० हरिदत्त शास्त्री* 40.00
वैदिक साहित्य एवं संस्कृति *डॉ० कपिलदेव द्विवेदी* 250.00
पालि-प्राकृत-अपभ्रंश-संग्रह *डॉ० रामअवध पाण्डेय तथा डॉ० रविनाथ मिश्र* 80.00
चतुर्भाणी (चार एकनट नाटक) *डॉ० मोतीचन्द्र, डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल* 400.00
शृङ्गारमञ्जरी सट्टकम् (श्री विश्वेश्वर-पाण्डेय प्रणीतं) *सम्पा० : बाबूलाल शुक्ल शास्त्री* 20.00
मुद्राराक्षसम् *सम्पा० : डॉ० रमाशंकर त्रिपाठी* 100.00
शिशुपालवधम् (प्रथम सर्गः) *डॉ० जनार्दन गंगाधर रटाटे* 24.00
किरातार्जुनीयम् (प्रथम सर्गः) *भारवि रचित* 15.00
कादम्बरी (महाश्वेतावृत्तान्त) *डॉ० देवर्षि सनाढ्य, श्री विश्वम्भरनाथ त्रिपाठी* 40.00

कादम्बरी : कथामुखम् (बाणभट्ट विरचितम्)
डॉ० विश्वम्भरनाथ त्रिपाठी 40.00
उत्तररामचरितम् (श्री भवभूति प्रणीतम्) 'प्रभावती' हिन्दी व्याख्यासंवलिता
डॉ० रामअवध पाण्डेय, डॉ० रविनाथ मिश्र 120.00
कठोपनिषद (प्रथम अध्याय) *डॉ० राजमणि पाण्डेय, डॉ० रविनाथ मिश्र* 15.00
मेघदूतम् (कालिदास) *डॉ० रमाशंकर त्रिपाठी* 50.00
दशरूपकम् *डॉ० रमाशंकर त्रिपाठी* 150.00
अभिज्ञानशाकुन्तलम् *डॉ० शिवशंकर गुप्त* 80.00
श्रीमद्भगवद्गीता (अध्याय 2-3) (तत्त्वबोधिनी टीका) " 20.00
श्रीमद्भगवद्गीता (अध्याय 9) (तत्त्वबोधिनी टीका) " 12.00
नलोपाख्यानम् (वेदव्यास) *गंगासहाय 'प्रेमी'* 40.00
तैत्तिरीयप्रातिशाख्यम् *डॉ० कमलाप्रसाद पाण्डेय* 20.00

हिन्दी-साहित्य

आधुनिक हिन्दी आलोचना : संदर्भ एवं दृष्टि
(पारिभाषिक शब्दावली का साक्ष्य) *डॉ० रामचन्द्र तिवारी* 150.00
आलोचक का दायित्व (संशोधित परिवर्धित संस्करण) " 150.00
काव्य रस : चिन्तन और आस्वाद *डॉ० भगीरथ मिश्र* 50.00
नया काव्यशास्त्र *डॉ० भगीरथ मिश्र* 80.00
काव्यशास्त्र *डॉ० भगीरथ मिश्र* 100.00
पाश्चात्य काव्यशास्त्र : इतिहास, सिद्धान्त और वाद " 70.00
भारतीय तथा पाश्चात्य काव्यशास्त्र *डॉ० अर्चना श्रीवास्तव* 65.00
भारतीय समीक्षा-सिद्धान्त *डॉ० सूर्यनारायण द्विवेदी* 100.00
कार्यालयीय हिन्दी *डॉ० विजयपाल सिंह* 50.00
प्रामाणिक व्याकरण एवं रचना *डॉ० विजयपाल सिंह* 65.00
प्रयोजनमूलक हिन्दी : सिद्धान्त और व्यवहार (परिवर्धित संस्करण)
(सरकारी कामकाज में हिन्दी का प्रयोग) *रघुनन्दनप्रसाद शर्मा* 180.00
व्यावहारिक और प्रयोजनमूलक हिन्दी *डॉ० अर्चना श्रीवास्तव* 40.00
हिन्दी भाषा और लिपि का ऐतिहासिक विकास
डॉ० सत्यनारायण त्रिपाठी 60.00
हिन्दी भाषा : व्याकरण और रचना *डॉ० अर्जुन तिवारी* 120.00
भाषाशास्त्र तथा हिन्दी भाषा की रूपरेखा *डॉ० देवेन्द्रकुमार शास्त्री* 100.00
भाषा-विज्ञान एवं भाषा-शास्त्र *डॉ० कपिलदेव द्विवेदी* 120.00
लिपि, वर्तनी और भाषा *डॉ० बदरीनाथ कपूर* 20.00
हिन्दी व्याकरण की सरल पद्धति *डॉ० बदरीनाथ कपूर* 25.00
नूतन पर्यायवाची एवं विपर्याय कोश *डॉ० बदरीनाथ कपूर* 200.00
आधुनिक भारतीय कविता *डॉ० अवधेशनारायण मिश्र*
डॉ० नन्दकिशोर पाण्डेय
नयी कविता में युगबोध *डॉ० प्रसद्धिनारायण चौबे* 100.00
आचार्य विनोबा की साहित्य दृष्टि *डॉ० सुमन जैन* 250.00
हिन्दी उपन्यास *डॉ० रामचन्द्र तिवारी* 120.00
आलोचक का दायित्व (संशोधित परिवर्धित संस्करण) " 150.00
हिन्दी गद्य : प्रकृति और रचना संदर्भ *डॉ० रामचन्द्र तिवारी* 120.00
कृति चिन्तन और मूल्यांकन सन्दर्भ *डॉ० रामचन्द्र तिवारी* 200.00
हिन्दी का गद्य साहित्य (पंचम आवृत्ति) *डॉ० रामचन्द्र तिवारी* 400.00
हिन्दी साहित्य का नवीन इतिहास *डॉ० लालसाहब सिंह* 50.00
हिन्दी साहित्य का इतिहास : वस्तुनिष्ठ अध्ययन *डॉ० कुसुम राय* (यंत्रस्थ)
हिन्दी नवजागरण *डॉ० गजेन्द्र पाठक* 180.00

नयी कविता में युगबोध *डॉ० प्रसिद्धनारायण चौबे* 100.00
उत्तर शती के उपन्यासों में स्त्री *डॉ० शशिकला त्रिपाठी* 180.00
वैतरणी से वैश्वानर की यात्रा (सन्दर्भ : शिवप्रसाद सिंह के उपन्यास)
डॉ० आनन्दकुमार पाण्डेय 200.00
मध्ययुगीन काव्य प्रतिभाएँ *डॉ० रामकली सराफ* 80.00
वल्लभ सम्प्रदाय और अष्टछाप *डॉ० युगेश्वर* 90.00
वाग्द्वार (सात हिन्दी कवियों का मौलिक अध्ययन)
प्रो० कल्याणमल लोढ़ा 250.00
हिन्दी साहित्य : विविध परिदृश्य *डॉ० सदानन्दप्रसाद गुप्त* 160.00
मलिक मुहम्मद जायसी *डॉ० कन्हैया सिंह* 75.00
भारतेन्दु के नाट्य शब्द *डॉ० पूर्णिमा सत्यदेव* 100.00
क्रान्तिकारी कवि निराला *डॉ० बच्चन सिंह* 80.00
निराला की काव्यभाषा *डॉ० शकुन्तला शुक्ल* 80.00
मुक्तिबोध और उनकी कविता *डॉ० ब्रजबाला सिंह* 180.00
भवानीप्रसाद मिश्र और उनका काव्य संसार *डॉ० अनुपम मिश्र* 160.00
हिन्दी व्यंग्य साहित्य और हरिशंकर परसाई *डॉ० मदालसा व्यास* 200.00
सर्वेश्वरदयाल सक्सेना और उनका काव्य संसार *डॉ० मञ्जु त्रिपाठी* 100.00
फणीश्वरनाथ रेणु और उनका कथा साहित्य *डॉ० रागिनी वर्मा* 320.00
फणीश्वरनाथ रेणु की कहानियों में सामाजिक यथार्थ
डॉ० सुधांशु शुक्ल 80.00
प्रगतिशील काव्यधारा और त्रिलोचन *डॉ० हरिनिवास पाण्डेय* 150.00
आधुनिकता और मोहन राकेश *डॉ० उर्मिला मिश्र* 80.00
रघुवीर सहाय की काव्यानुभूति और काव्यभाषा
डॉ० अनन्तकीर्ति तिवारी 80.00
प्रगतिशील आलोचना की परम्परा और
डॉ० रामविलास शर्मा *डॉ० राजीव सिंह* 140.00
निबन्धकार पं० विद्यानिवास मिश्र *डॉ० श्रुति मुखर्जी* 50.00
समकालीन कविता की प्रवृत्तियाँ *डॉ० रामकली सराफ* 200.00
साहित्य, सौन्दर्य और संस्कृति *सं० डॉ० रतनकुमार पाण्डेय* 150.00
साहित्य और संस्कृति *डॉ० कन्हैया सिंह, डॉ० राजेश सिंह* 140.00

लोक-साहित्य / भोजपुरी साहित्य

A Comparative Study of Bhojpuri & Bengali
Dr. Shruti Pandey 150.00
भोजपुरी लोक साहित्य *डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय* 250.00
गंगाघाटी के गीत *डॉ० हीरालाल तिवारी* 100.00
लोकगीतों के संदर्भ और आयाम *डॉ० शान्ति जैन* 700.00
बदमाश दर्पण (तेग़ अली) *सम्पा० : श्री नारायणदास* 60.00
पुरइन-पात (पाठ्य-ग्रन्थ)
सम्पा० : डॉ० अरुणेश 'नीरन', डॉ० चितरंजन मिश्र 80.00
पुरइन-पात (भोजपुरी साहित्य संचयन) *सम्पा० : डॉ० अरुणेश 'नीरन',*
डॉ० चितरंजन मिश्र 200.00
भोजपुरी हृदयेश सतसई *श्रीकृष्णराय हृदयेश* 120.00

संत-साहित्य

गोरखनाथ : नाथ सम्प्रदाय के परिप्रेक्ष्य में *डॉ० नागेन्द्रनाथ उपाध्याय* 250.00
हिन्दी संत काव्य : समाजशास्त्रीय अध्ययन *प्रो० वासुदेव सिंह* 380.00
संत-साहित्य (औपनिषद विचाराधारा के परिवेश में) *डॉ० राधेश्याम दूबे* 100.00
हिन्दी संत साहित्य का केन्द्र-बिन्दु *डॉ० सत्यनारायण उपाध्याय* 180.00

दादूदयाल ग्रन्थावली (प्रथम पर्व)	*डॉ० सत्यनारायण उपाध्याय*	340.00
मध्ययुगीन हिन्दी संत साहित्य और रवीन्द्रनाथ	*डॉ० रामेश्वर मिश्र*	80.00
संत रज्जब	*डॉ० नन्दकिशोर पाण्डेय*	150.00

कबीर-साहित्य

भये कबीर कबीर	*डॉ० शुकदेव सिंह*	250.00
कबीर और अखा : तुलनात्मक अध्ययन	*डॉ० रामनाथ घूरेलाल शर्मा*	80.00
कबीर और भारतीय संत साहित्य	*डॉ० रामचन्द्र तिवारी*	100.00
कबीर-वाङ्मय (पाठभेद, टीका तथा समीक्षा सहित)	*डॉ० जयदेव सिंह, डॉ० वासुदेव सिंह*	
प्रथम खण्ड : **रमैनी**		50.00
द्वितीय खण्ड : **सबद**		200.00
तृतीय खण्ड : **साखी**		140.00
कबीर वाणी पीयूष	*डॉ० जयदेव सिंह तथा डॉ० वासुदेव सिंह*	50.00
कबीर-साखी-सुधा	*डॉ० जयदेव सिंह तथा डॉ० वासुदेव सिंह*	10.00

तुलसी साहित्य-समीक्षा

कथा राम कै गूढ़	*डॉ० रामचन्द्र तिवारी*	125.00
हिन्दी काव्य में हनुमत् चरित्र	*डॉ० मीनाकुमारी गुप्त*	400.00
मानस सूक्ति सुधा	*डॉ० भगवानदेव पाण्डेय*	80.00
तुलसीकृत विनयपत्रिका का काव्यशास्त्रीय अध्ययन	*डॉ० रामअवतार पाण्डेय*	320.00
मध्यकालीन अवधी का विकास	*डॉ० कन्हैया सिंह व डॉ० अनिलकुमार तिवारी*	160.00

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल साहित्य तथा समीक्षा

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल	*डॉ० रामचन्द्र तिवारी*	40.00
त्रिवेणी	*सम्पा० : डॉ० रामचन्द्र तिवारी*	30.00
चिन्तामणि	*सम्पा० : डॉ० रामचन्द्र तिवारी*	40.00
आचार्य रामचन्द्र शुक्ल आलोचना कोश	*डॉ० रामचन्द्र तिवारी*	50.00

प्रेमचंद-साहित्य

कर्मभूमि (उपन्यास)	*प्रेमचंद*	40.00
निर्मला	*प्रेमचंद*	25.00
संक्षिप्त गबन	*प्रेमचंद*	30.00
गबन (सम्पूर्ण)	*प्रेमचंद*	45.00
गोदान	*प्रेमचंद*	75.00
मानसरोवर (भाग-1)	*प्रेमचंद*	50.00

प्रसाद-साहित्य

ध्रुवस्वामिनी (नाटक)	*जयशंकर प्रसाद*	9.00
ध्रुवस्वामिनी (मूलनाटक तथा समीक्षा)	*जयशंकर प्रसाद*	20.00
प्रसाद तथा आँसू (मूल)	*जयशंकर प्रसाद*	20.00
प्रसाद तथा 'आँसू' (मूल, टीका तथा समीक्षा)	*जयशंकर प्रसाद*	20.00
कामायनी (काव्य)	*जयशंकर प्रसाद*	20.00
लहर (कविता)	*जयशंकर प्रसाद*	15.00
चन्द्रगुप्त (नाटक)	*जयशंकर प्रसाद*	25.00
स्कन्दगुप्त (नाटक)	*जयशंकर प्रसाद*	20.00
अजातशत्रु (नाटक)	*जयशंकर प्रसाद*	16.00
अंतरंग संस्मरणों में जयशंकर 'प्रसाद'	*सम्पा० : पुरुषोत्तमदास मोदी*	150.00
प्रसाद की चतुर्दशपदियाँ	*डॉ० किशोरीलाल गुप्त*	50.00
प्रसाद स्मृति वातायन	*सम्पा० : डॉ० विद्यानिवास मिश्र*	150.00

अज्ञेय साहित्य-समीक्षा

अज्ञेय : एक मनौवैज्ञानिक अध्ययन	*डॉ० ज्वालाप्रसाद खेतान*	40.00
अज्ञेय : चेतना के सीमान्त	*डॉ० ज्वालाप्रसाद खेतान*	80.00
अज्ञेय : शिखर अनुभूतियाँ	*डॉ० ज्वालाप्रसाद खेतान*	80.00
अज्ञेय की गद्य-शैली	*डॉ० सावित्री मिश्र*	50.00
अज्ञेय और 'शेखर : एक जीवनी'	*डॉ० अनन्तकीर्ति तिवारी*	40.00

काव्य-ग्रन्थ

जौहर	*श्यामनारायण पाण्डेय*	100.00
परशुराम (खण्ड-काव्य)	*श्यामनारायण पाण्डेय*	90.00
वेलि क्रिसन रुकमणी री	*सम्पा० : डॉ० आनन्दप्रकाश दीक्षित*	80.00
रीति काव्यधारा	*डॉ० रामचन्द्र तिवारी व डॉ० रामफेर त्रिपाठी*	50.00
कीर्तिलता और विद्यापति का युग	*डॉ० अवधेश प्रधान*	40.00
संत रज्जब	*डॉ० नन्दकिशोर पाण्डेय*	150.00
आधुनिक भारतीय कविता	*डॉ० अवधेश नारायण मिश्र*	80.00

भूगोल

राजनीतिक भूगोल एवं भू राजनीति	*डॉ० अकान्त दीक्षित*	150.00
भौगोलिक चिन्तन : उद्भव एवं विकास	*डॉ० श्रीकान्त दीक्षित*	140.00

जीवविज्ञान

Fishes of U.P. & Bihar	*Dr. Gopalji Srivastava*	200.00

भौतक विज्ञान

University Practical Physics (With viva-voce) (Part-1)	*Dr. C.K. Bhattacharya (& 5 others)*	60.00
Waves and Oscillations (Fourth Revised & Enlarged Edition)	*Dr. C.K. Bhattacharya*	140.00

रसायन विज्ञान

Physical Chemistry	*Dr. Veena Arora*	150.00
Inorganic Chemistry	*Dr. Veena Arora*	180.00

ENGLISH LITERATURE

The Mayor of Casterbridge	*Thomas Hardy*	50.00
Shakespearian Comedy	*H. B. Charlton*	120.00
Shakespere : A Critical Study of His Mind & Art	*Edward Dowden*	150.00
Introduction to Movements, Ages and Literary Forms	*Dr. R.N. Singh*	80.00

TECHNICAL WRITING

Technical Writing and Communication	*Dr. R.S. Sharma*	110.00

विश्वविद्यालय प्रकाशन

विशालाक्षी भवन, चौक पुलिस स्टेशन के बगल में, पो०बाक्स 1149, वाराणसी-221 001 (उ०प्र०)

फोन : (0542) 2413741, 2413082 • फैक्स : (0542) 2413082 • ई० मेल : sales@vvpbooks.com • Website : www.vvpbooks.com

आवश्यकता है। भारतीय भाषाओं के अध्ययन-अध्यापन को वर्तमान सन्दर्भ में रोजगारपरक बनाना होगा। उसे इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के अनुरूप करना होगा। तभी इसका भविष्य सुरक्षित रहेगा।

आचार्य सम्मान हेतु आमंत्रित

आचार्य निरंजननाथ स्मृति सेवा संस्थान के सहयोग से साहित्यिक पत्रिका **सम्बोधन** द्वारा प्रति वर्ष दिया जाने वाला आचार्य निरंजननाथ सम्मान इस वर्ष ग़ज़ल विधा की पुस्तक पर दिया जायगा।

पुरस्कार हेतु गत पाँच वर्षों (2000 से 2005) में प्रकाशित ग़ज़ल विधा की पुस्तक की दो प्रतियाँ 31 अगस्त 2006 तक **कमर मेवाड़ी,** संयोजक, आचार्य निरंजननाथ सम्मान, सम्बोधन, चांदपोल, कांकरोली-313324 (जिला राजसमंद) राजस्थान को भेजें।

स्मारिका
कर्मभूमि

प्रेमचंद साहित्य संस्थान, वाराणसी की पत्रिका कर्मभूमि प्रेमचंद की 125वीं वर्षगाँठ के उपलक्ष्य में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी की विशद् प्रस्तुति है।

प्रेमचंद के सवा सौवें वर्ष में देशभर में विविध आयोजन हुए और किए गए। भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय ने तो पूरे साल के आयोजन के लिए समिति भी बनायी जिसने जगह-जगह संगोष्ठियाँ और संगोष्ठियों के माध्यम से अपनी योजनाओं को घोषित किया। प्रेमचंद पर दो अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार हुए एक दिल्ली में साहित्य अकादमी द्वारा और दूसरा बनारस में सम्मिलित रूप से प्रेमचंद साहित्य संस्थान, बनारस-गोरखपुर, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, नई दिल्ली और हिन्दी विभाग, बी०एच०यू० के सहयोग से।

बनारस में 6-8 नवम्बर, 2005 को हुई इस अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में इसमें प्रेमचंद की महान कृति 'गोदान' को ही केन्द्र में रखा गया था। किसी एक कृति पर तीन दिन का अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार जिसमें 30 से भी अधिक वक्ता हों अपने आप में एक उपलब्धि है। इसी उपलब्धि को डॉ० पी०एन० सिंह ने (जो स्वयं इस संगोष्ठी में तन्मय भाव से सम्मिलित थे) कर्मभूमि में बड़े ही नियोजित ढंग से क्रमवार प्रस्तुत किया है।

गोदान फिर से पढ़ने का अर्थ कई बार न सही एक बार तो गोदान जरूर पढ़ा है, और यह सच भी है क्योंकि एक पढ़ सकने वाले आदमी ने गोदान नहीं पढ़ा तो क्या पढ़ा? दूसरी बात यह कि एक रचना को रचना की तरह पढ़ना ही उसके साथ न्यायसंगत है, इसे नामवर सिंह ने रेखांकित किया है। परन्तु यह पढ़ना मात्र Text की तरह पढ़ना नहीं है वरन् जैसा कि नामवरजी ने कहा 'Text' को 'Context' के साथ पढ़ने की बात है, क्योंकि उनका मानना है, ''गोदान जैसी कालजयी कृति बिना 'कांटेक्स्ट' के नहीं समझी जा सकती। अंग्रेजी साम्राज्य, तालुकेदारी, पुरोहिती सत्ता, सूदखोरी, उदीयमान पूँजीवाद और इनके दबावों में टूटते, बर्बाद होते भारतीय किसान को इनसे काटकर देखना गोदान को बिल्कुल अबूझा बनाना है। इतना ही नहीं, होरी का चरित्र भी गाँधीजी के दूसरे सत्याग्रह की पीठिका में गढ़ा गया था। गाँधीजी के दूसरे सत्याग्रह की असफलता और टूटन का प्रतिबिम्ब होरी में स्पष्ट है।'' अत: यदि नामवर सिंह गोदान को 'पोलिटिकल क्रिटिक' की तरह पढ़े जाने की माँग करते हैं तो उक्त सन्दर्भों में ही, विचारधारा के Context में नहीं क्योंकि उससे तो वे अपने वक्तव्य के शुरुआत में ही 'झाड़-झंखाड़' साफ करने वाले प्रतीक से पाठकों को सचेत करते हैं। अगर विचारधारा की बात है भी तो उसको बाद के लिए, आलोचना के लिए छोड़ा जाना चाहिए। नामवरजी का यह निष्कर्ष कि ''गोदान में एक जटिल जीवन-दृष्टि है, न कि विचारधारा'' एक ऐसा निष्कर्ष है जो गोदान को फिर से पढ़ने वालों और गोदान को लेकर झाड़-झंखाड़ में फँसे, दोनों के लिए महत्त्व का है। गोदान 'पोलिटिकल क्रिटिक' उसी तरह है जिस तरह मैला आँचल 'स्वतंत्रता समीक्षा'।

तीसरी और अन्तिम बात, कर्मभूमि पत्रिका के अपने सम्पादकीय में सदानन्द शाही ने प्रेमचंद के लिए एक बहुत मार्के की बात कही है कि ''वे हमारी परम्परा के भीतरी आलोचक थे।'' प्रेमचंद के जिन सृजनात्मक सन्दर्भों की छाया में यह बात शाहीजी कर रहे हैं वह वास्तव में महत्त्वपूर्ण है। उम्मीद है कि डॉ० शाही प्रेमचंद साहित्य संस्थान के भावी आयोजनों में प्रेमचंद के इस रूप को और स्पष्ट रूप से प्रत्यक्ष और परिभाषित करेंगे।

सबसे प्यारी होती पुस्तक,
बीज प्रेम का बोती पुस्तक।
सुख-दु:ख में वह साथ निभाती,
अच्छी-अच्छी बात बताती॥

सबको कितनी भाती पुस्तक,
सबकी अक्ल बढ़ाती पुस्तक।
भरी ज्ञान से होती पुस्तक,
हमें महान बनाती पुस्तक॥

—डॉ० विनयकुमार मालवीय
इलाहाबाद

हाँ, हृदय देश का मध्य हिंद रण-मदोन्मत्त हुँकार बढ़ा।
झाँसी की रानी बढ़ी और नाना लेकर तलवार बढ़ा॥

आज़ादी की मच गई धूम फिर शोर हुआ आज़ादी का।
फिर जाग उठा यह सुप्त देश चालीस कोटि आबादी का॥

लाखों बलिदान ले चुकी है आज़ादी आनेवाली है।
अब देर नहीं रह गई तनिक काली का खप्पर ख़ाली है॥

पीछे है सृजन, 'त्रिशूल' हाथ में लेता प्रथम कपाली है।
है अंत भला सो हाथ आज आई अपने ही पाली है॥

—गयाप्रसाद शुकल सनेही 'त्रिशूल'

'त्रिशूल' झुकाया नहीं जा सका

गयाप्रसाद शुक्ल सनेही शुरू में शृंगार रस की कविताएँ लिखा करते थे। वह सरकारी स्कूल में हेडमास्टर थे। श्री गणेशशंकर विद्यार्थी के सुझाव पर उन्होंने सरकारी कोप से बचने के लिए 'त्रिशूल' के उपनाम से कविताएँ पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित कराईं। राष्ट्रभक्ति से ओत-प्रोत ओज की उनकी कुछ कविताएँ इतनी लोकप्रिय हुईं कि राष्ट्रीय जागरण के लिए निकाली जाने वाली प्रभातफेरियों में युवक उन्हें गाने लगे।

'त्रिशूल' नाम से प्रकाशित आग उगलने वाली कविताओं से अंगरेज अधिकारियों में हड़कंप मच गया। एक दिन उन्नाव की खुफिया पुलिस ने सुराग लगा लिया कि 'त्रिशूल' नाम से लिखने वाले सरकारी स्कूल के हेडमास्टर सनेही हैं। उन पर दबाव डाला गया कि वह सरकार विरोधी कविताएँ लिखना बन्द कर दें। एक हिन्दुस्तानी अफसर ने उनसे कहा, ''आप क्रान्तिकारियों के चक्कर पड़कर अपनी सरकारी नौकरी गँवाने पर क्यों उतारू हैं?'' सनेहीजी ने उत्तर दिया, ''**मेरा उपनाम त्रिशूल भगवान शंकर के हाथों का आभूषण है। त्रिशूल प्रलयंकर का प्रतीक है। फिर भला मैं विदेशी सत्ता से कैसे भयाक्रांत हो सकता हूँ?**''

वर्ष 1921 में सनेहीजी ने असहयोग आन्दोलन से प्रेरित होकर हेडमास्टर के पद से त्यागपत्र दे दिया। वह कानपुर में रहकर खुलकर विदेशी सत्ता के विरुद्ध सक्रिय हो गए।

—शिवकुमार गोयल

हम हिन्दी के पुत्र...

भूल गये हम अपनी संस्कृति,
भूले अपनी भाषा,
राष्ट्रप्रेम की सत्य-सनातन
भूल गये परिभाषा
डाल गई हैं आँखों पर
पर्दा पश्चिमी हवायें!

साँस-साँस में बसे बिहारी
तुलसी, सूर, कबीरा
दर्श कराती अपने मोहन के
मोहन की मीरा
शब्द-शब्द से बहती हैं
नित जीवन की कवितायें!

—जय चक्रवर्ती, रायबरेली

सम्मान-पुरस्कार

विष्णु प्रभाकर को साहित्य अकादमी सम्मान

शताब्दी की ओर अग्रसर वयोवृद्ध साहित्यकार विष्णु प्रभाकर ने 21 जून 2006 को जीवन के चौरानबे वर्ष पूर्ण कर पंचानबे वर्ष में प्रवेश किया। साहित्य अकादमी ने सर्वोच्च सम्मान महत्तर सदस्यता प्रदान की।

विष्णु प्रभाकर ने जीवनपर्यन्त कलम की मजदूरी की। हिन्दी गद्य की विभिन्न विधाओं को समृद्ध करते हुए हिन्दी साहित्य को प्रतिष्ठा प्रदान की।

चौदह वर्षों के सतत प्रयास से बंगला साहित्यकार शरतचन्द्र के जीवन से सम्बद्ध समस्त सामग्री का अनुशीलन कर विष्णु प्रभाकर ने 'आवारा मसीहा' (1974 ई०) की रचना की। इस लेखन में उनकी दृष्टि अत्यन्त संवेदनशील रही— ''श्रेष्ठ जीवनी लेखक काल, देश, व्यक्ति और घटना की सीमाओं को तोड़कर अनुभूतियों के सौन्दर्य में विश्लेषण करता है।'' शरत् के रचना सौन्दर्य को जीवन में अनुभूत करते हुए 'आवारा मसीहा' को अमरत्व प्रदान किया। कहा जा सकता है ''इस कृति से शरतचन्द्र की प्रतिभा का पुनर्सर्जन हुआ, जो मानवीय संवेदना के स्तर पर आज और भी प्रासंगिक बन गया है।''

यात्रा साहित्य के अंतर्गत 'स्फीतियों की बारिश' (1982 ई०), 'किन्नर धर्म लोक' (1983 ई०), 'लद्दाख में राग विराग' (1983 ई०) कृतियों में एक ओर हिमालय का मुक्त नैसर्गिक सौन्दर्य है, दूसरी ओर हमसफरों का मूक निश्छल और अनगढ़ प्रेम। 'जाने अनजाने' (1962 ई०) आपका रेखाचित्रों का संग्रह है जिसे विश्वविद्यालय प्रकाशन ने प्रकाशित किया था। तीन खण्डों में प्रकाशित विष्णु प्रभाकर की आत्मकथा—पंखहीन, मुक्त गगन में और पंछी उड़ गया एक साहित्यकार के संघर्षपूर्ण जीवन की कथा है। विष्णुजी ने कभी स्वाभिमान के साथ समझौता नहीं किया। साहित्य अकादमी ने विष्णुजी की और उल्लेखनीय योगदान स्वीकार कर उन्हें महत्तर सदस्यता प्रदान की। साहित्य जगत की ओर से विष्णुजी का शत-शत अभिनन्दन।

राष्ट्रधर्म गौरव सम्मान

दस हजार रुपये का यह सम्मान समालोचना विधा में वरिष्ठ समालोचक **डॉ० सन्तोष कुमार तिवारी** (सागर, म०प्र०) को उनकी समालोचना कृति 'अज्ञेय से अरुण कमल' के लिए प्रदान किया जायेगा। वहीं उपन्यास विधा में, शाहजहाँपुर में जन्मीं लखनऊ निवासी उदीयमान उपन्यास लेखिका **सुश्री अञ्जली भारती** को उनके उपन्यास 'दहक' के लिए दिया जायेगा।

इन दोनों साहित्यकारों को दस-दस हजार रुपये की राशि, सम्मानपत्र, स्मृतिचिह्न आदि प्रदान कर सम्मानित किया जायेगा।

केदार सम्मान, 2005

केदार सम्मान 2005, डॉ० जीवन सिंह से प्राप्त करते हुए आशुतोष दुबे

समकालीन हिन्दी कविता का प्रतिष्ठित केदार सम्मान 2005 **आशुतोष दुबे** को उनकी कृति 'असम्भव सारांश' के लिए प्रदान किया गया। युवा आलोचक पंकज चतुर्वेदी के कथनानुसार कवि ने प्रतिबद्धता जैसी अवधारणा को नया अर्थ प्रदान किया है और कुछ अलग सोचने को भी प्रेरित करती है। केदारनाथ अग्रवाल के कवि कर्म की चर्चा करते हुए डॉ० जीवन सिंह ने कहा—अभिधा में कला पैदा कर देना केवल केदारजी का काम है। कविता की प्राथमिकता को केदारजी ने सदैव जीवित रखा है। इस अवसर पर केदारजी व्यक्तित्व और कृतित्व पर डॉ० सदानन्द शाही, डॉ० अष्टभुजा शुक्ल, डॉ० बृजबाला सिंह, रंजना श्रीवास्तव आदि ने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम का संयोजन महेश अग्रवाल ने किया।

कवि त्रिलोचन शास्त्री को 'अर्चना' द्वारा सम्मान-पुरस्कार

कोलकाता की सुप्रसिद्ध साहित्यिक-सांस्कृतिक संस्था 'अर्चना' ने हरिद्वार जाकर एक विशेष समारोह में विशिष्ट कवि **त्रिलोचन शास्त्री** को सम्मान-पुरस्कार स्वरूप ग्यारह हजार की राशि और अंगवस्त्र सहित माल्यार्पण कर सम्मानित किया। 'अर्चना' के संरक्षक सदस्य श्री राधेश्याम रूँगटा के कर-कमलों से सुसम्पन्न हुआ। समारोह की अध्यक्षता की ओएनजीसी के महाप्रबन्धक बुद्धिनाथ मिश्र ने। उन्होंने अपने उद्गार में कहा कि त्रिलोचन शास्त्री एक ऐसे कवि हैं जो चलते-फिरते एक शब्दकोश हैं, उन्होंने साहित्य और काव्य को जितना दिया है उसकी बराबरी बहुत कम साहित्यकार कर पाते हैं।

डॉ० रामविलास शर्मा आलोचना सम्मान

डॉ० जीवन सिंह से प्राप्त करते हुए रघुवंशमणि त्रिपाठी

केदार सम्मान (बाँदा) के अन्तर्गत 'उन्नयन' द्वारा प्रायोजित डॉ० रामविलास शर्मा सम्मान आलोचक **रघुवंशमणि त्रिपाठी** को उनकी कृति 'समय में हस्तक्षेप' तथा आलोचना कर्म के लिए डॉ० जीवन सिंह द्वारा प्रदान किया गया। इस अवसर पर श्री मणि ने कहा—आलोचना वर्तमान समय की केन्द्रीय विधा है, आलोचना कर्म एवं शोध कर्म है, इसे गम्भीरता से लिया जाना चाहिए।

भरत प्रसाद को सृजन-सम्मान

अखिल भारतीय स्तर पर दिया जाने वाला 'सृजन-सम्मान' इस वर्ष छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर में वर्ष 2005 के लिए कहानी विधा का 'डॉ० बल्देव मिश्र सम्मान' **भरतप्रसाद** के कहानी-संग्रह 'और फिर एक दिन' को दिया गया। यह कहानीकार की प्रथम कृति है, जो वर्ष 2004 में प्रकाशित हुई।

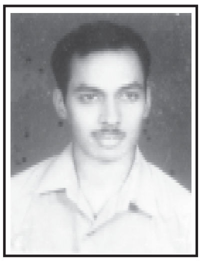

इस पुरस्कार के अन्तर्गत भरतप्रसाद को 2001 रुपये, शाल, नारियल, प्रमाण-पत्र और स्मृति-चिह्न राज्य के राज्यपाल श्री के०एम० सेठ द्वारा प्रदान किया गया।

असगर वजाहत को इंदु शर्मा कथा सम्मान

असगर वजाहत को 2005 में प्रकाशित 'कैसी आगी लगाई' उपन्यास पर ब्रिटेन में बसे दक्षिण एशियाई लेखकों के समूह 'कथा' द्वारा वर्ष 2006 का अन्तर्राष्ट्रीय इंदु शर्मा कथा सम्मान लन्दन के हाउस ऑफ लार्ड्स में दिया जायगा। इसके लिए श्री वजाहत को लन्दन आने-जाने का हवाई टिकट, एक सप्ताह का आवास तथा भ्रमण की सुविधा दी जायगी।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र पुरस्कार

शास्त्री भवन नई दिल्ली स्थित सभागार में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र पुरस्कार वितरण समारोह में केन्द्रीय सूचना और प्रसारण मंत्री प्रियरंजनदास मुंशी ने हिन्दी के 16 लेखकों और पत्रकारों को वर्ष 2003 के भारतेन्दु हरिश्चन्द्र पुरस्कार से सम्मानित किया। पत्रकार **आलोक मेहता** को उनकी पुस्तक 'पत्रकारिता की लक्ष्मण रेखा' के लिए प्रथम पुरस्कार, पत्रकार **अरविंद मोहन** को उनकी पुस्तक 'पत्रकार और पत्रकारिता प्रशिक्षण' के लिए द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया। प्रथम पुरस्कार के तौर पर पैंतीस हजार रुपये और द्वितीय पुरस्कार के तौर पर पच्चीस हजार रुपये की राशि व प्रशस्ति-पत्र प्रदान किया गया।

पत्रकारिता वर्ग में तीसरा पुरस्कार **चन्द्रभूषण** को उनकी पांडुलिपि 'पुस्तक प्रकाशन : विविध आयाम' के लिए दिया गया। पुरस्कार स्वरूप उन्हें बीस हजार रुपये और प्रशस्ति-पत्र दिया गया। इस वर्ग में पाँच-पाँच हजार रुपये के पाँच पुरस्कार रामसागर शुक्ल, बच्चन सिंह, रमेश कुमार जैन, महावीर सिंहल और श्रीमती डॉ० कौशल शर्मा को दिए गए।

संतोष आनन्द को निरालाश्री

साहित्य प्रेमी मंडल द्वारा एक समारोह में प्रसिद्ध गीतकार **संतोष आनन्द** को निरालाश्री सम्मान से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर 'स्वर गंगा' शीर्षक से कवि सम्मेलन भी किया गया। कवि डॉ० कुँवर बेचैन की अध्यक्षता में डॉ० सीता सागर, महेन्द्र अजनबी, गोपीनाथ उपेक्षित, गंगाशरण तृषित और कृष्णकांत मयूर आदि ने काव्य-पाठ किया।

डॉ० रामचन्द्र तिवारी को नरेन्द्रमोहन स्मृति सम्मान

संवाद 2006 के अवसर पर गोरखपुर विश्वविद्यालय के अवकाशप्राप्त **आचार्य रामचन्द्र तिवारी** को आजीवन साहित्य सृजन के लिए नरेन्द्रमोहन स्मृति सम्मान प्रदान किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि नामवर सिंह ने कहा—''तिवारीजी को सम्मानित करते हुए मेरे कर कमल के हो गये हैं। विशेष रूप से आज का दिन मेरे लिए अविस्मरणीय रहेगा। तिवारीजी के स्वास्थ्य के बारे में चिन्ताजनक समाचार मिलते रहे हैं लेकिन उनकी ठनकती आवाज सुनकर निश्चिंत हुआ कि वे बहुत दिन रहेंगे।''

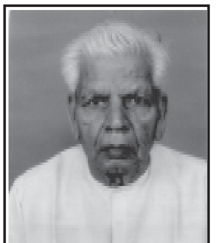

आचार्य तिवारी अपने सम्मान से विह्वल हो गये और कहा—''नामवरजी की उपस्थिति ने मुझे गौरवान्वित किया है। जागरण परिवार का भी आभारी हूँ।''

डॉ० त्रिवेदी 'साहित्य शिरोमणि' सम्मान से अलंकृत

एटा जनपद के कासगंज के समीपवर्ती सैलई नामक ग्राम्यांचल में श्री संकटमोचन धाम ट्रस्ट द्वारा आयोजित समारोह में उत्तरांचल के महामहिम राज्यपाल श्री सुदर्शन अग्रवाल द्वारा डॉ० गिरिजाशंकर त्रिवेदी को 'साहित्य शिरोमणि' सारस्वत सम्मान से अलंकृत किया। उनकी सम्मान-शृंखला में एक कड़ी और जुड़ गई है।

संस्था के प्रमुख ट्रस्टी न्यायमूर्ति पी०एन० पाराशर ने उनको माल्यार्पित किया, समारोह के अध्यक्ष तथा उत्तर प्रदेश के लोकायुक्त माननीय न्यायमूर्ति के०एन० मेहरोत्रा ने अंगवस्त्र प्रदान किए और मुख्य अतिथि श्री अग्रवाल ने उन्हें विशेष स्मृति चिह्न प्रदान कर 'साहित्य शिरोमणि' की उपाधि से विभूषित किया।

डॉ० अर्जुनदास केसरी को कैमूर-रत्न सम्मान

हिन्दी पत्रकारिता दिवस 2006 के अवसर पर पूर्वांचल प्रेस क्लब, इकाई सोनभद्र, उ०प्र० द्वारा डॉ० अर्जुनदास केसरी (लोक रचनाकार) सहित छह विभूतियों—सर्वश्री अजय शेखर, महावीर प्रसाद जालान, डॉ० मूलशंकर शर्मा, कैलाशनाथ, नरेन्द्र नीरव को पत्रकारिता तथा लेखन के क्षेत्र में दीर्घकालीन योगदान के लिए एक भव्य समारोह में विन्ध्याचल मण्डल के मण्डलायुक्त **श्री के०एम० पाण्डेय** द्वारा अंगवस्त्र, स्मृतिचिह्न, प्रशस्ति-पत्र, नारियल, माला प्रदान कर सम्मानित किया गया। इस समारोह की अध्यक्षता महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ के कुलपति **प्रो० सुरेन्द्र सिंह कुशवाहा** ने की। डॉ० केसरी को सोनरत्न, यू०पी० रत्न, साहित्य लोक भूषण सम्मान प्राप्त हो चुका है।

डॉ० श्याम सखा 'श्याम' पुरस्कृत

हरियाणा साहित्य अकादमी ने डॉ० श्याम सखा 'श्याम' की तीन कृतियों को पुरस्कृत करने की घोषणा की है—

कोई फायदा नहीं (वर्ष का श्रेष्ठ) दस हजार रुपये व प्रशस्ति-पत्र, शाल, श्रीफल आदि

महात्मा (सर्वश्रेष्ठ कहानी) प्रथम पुरस्कार, 3500 रुपये व प्रशस्ति-पत्र आदि।

नाविक के तीर (लघुकथा संग्रह), पाण्डुलिपि पुरस्कार, 7500 रुपये व प्रशस्ति-पत्र आदि।

साथ ही इस वर्ष राष्ट्रधर्म मासिक लखनऊ द्वारा आयोजित श्री राधेश्याम चितलंगिया कहानी प्रतियोगिता में उनकी कहानी **'महेसर का ताऊ'** को द्वितीय पुरस्कार 3000 रुपये नकद व प्रशस्ति-पत्र जो अक्टूबर में लखनऊ में दिया जाएगा, की घोषणा की गई। हरियाणा साहित्य अकादमी के पुरस्कार निकट भविष्य के चण्डीगढ़ में दिये जाएँगे।

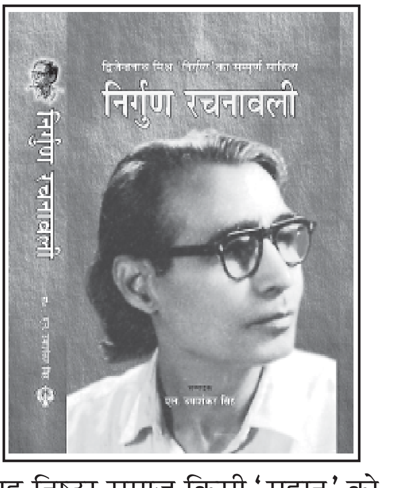

यह निष्ठुर समाज किसी 'महान' को कैसे भुला देता है।

एक महान कथाशिल्पी के साथ साहित्यिक मठाधीशों द्वारा किया गया महा-अन्याय!

पाठकों को किस प्रकार दिग्भ्रमित किया साहित्यिक मठाधीशों ने

देखिये

निर्गुण रचनावली (छः खण्डों में)

(*विश्वविद्यालय प्रकाशन* की अनोखी प्रस्तुति)

सम्पादक : एल. उमाशंकर सिंह

सजिल्द : 3000.00 अजिल्द : 1800.00

हिन्दी भाषा-भाषियों की संख्या दुनिया में तीसरे नम्बर पर और भारत में पहले नम्बर पर है। इसके बावजूद प्रकाशन की दृष्टि से हिन्दी भाषा काफी पिछड़ी हुई है। यह सही है कि भारत में सबसे अधिक अखबार, सबसे अधिक पत्रिकाएँ हिन्दी में प्रकाशित होती हैं। फिल्मों और टेलीविजन चैनलों पर भी हिन्दी का ही साम्राज्य छाया नजर आता है। इसके बावजूद यह भी एक सच्चाई है कि पुस्तक उद्योग हिन्दीभाषी लोगों की संख्या की तुलना में शर्मनाक हद तक कम है। यह कहना तो तथ्यपरक नहीं होगा कि हिन्दी में नवीनतम ज्ञान-विज्ञान से सम्बन्धित किताबों का अभाव है लेकिन यह अवश्य है कि मूल रूप में हिन्दी में लिखी ऐसी किताबें प्राय: नहीं हैं।

इस प्रकाशन उद्योग के केन्द्र में अब भी साहित्य का प्रकाशन ही है। साहित्य से इतर प्राय: मानविकी और सामाजिक विज्ञान के विषयों खास तौर पर इतिहास, राजनीति विज्ञान, समाजशास्त्र, शिक्षा, मीडिया, दर्शनशास्त्र, कला आदि अनुशासनों में ही हिन्दी प्रकाशन ने अपना विस्तार किया है। विज्ञान, प्रौद्योगिकी, स्वास्थ्य, वाणिज्य आदि विषयों में या तो छात्रोपयोगी पुस्तक उद्योग का विस्तार हुआ है या फिर जागरूकता पैदा करने वाले या उपभोक्ता केन्द्रित पुस्तकों का प्रकाशन दिखाई देता है। **—जवरीमल्ल पारख**

आपका पत्र

सम्पादकीय (परशुराम की प्रतीक्षा) के माध्यम से आपने कई ज्वलंत एवं विचारोत्तेजक प्रश्नों की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट किया है। निश्चय ही देश आज वैचारिक गुलामी का दंश झेलने को अभिशप्त है।

आम आदमी बेचारगी, तबाही और लाचारी के अंतहीन अँधेरों में भटक रहा है। ऐसे में स्वराष्ट्र, स्वभाषा, स्वसंस्कृति की बातें सोचना भी अर्थहीन हो गया है। साहित्यकारों और विचारकों की आवाज भीड़तंत्र ने निगल ली है। सम्पादकीय में व्यक्त साहसपूर्ण और ईमानदार टिप्पणियों के लिए मेरी बहुत-बहुत बधाई स्वीकारें। **—जय चक्रवर्ती**

राजभाषा अधिकारी, आईटीआई लिमिटेड, रायबरेली

'भारतीय वाङ्मय' शनैः-शनैः हिन्दी-जगत् की एक ख्यातनाम पत्रिका के रूप में स्थापित होती जा रही है। गत सात वर्षों से उनका यह अकादमिक अनुष्ठान निरन्तर विषय गांभीर्य से परिपूर्ण होता जा रहा है। मई-जून का अद्यतन अंक जहाँ जीवन में पुस्तकों के महत्त्व और उपयोगिता पर विशेष सामग्री दे सका है वहीं जानकारी और सूचनात्मक दृष्टि से एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण पत्रिका का दायित्व निभा सका है।

वस्तुत: पुस्तकों के प्रति घटती जनरुचि जीवन के मूल्यों के प्रति घटती अभिरुचि का द्योतक है। मीडिया के तमाम साधन जानकारी दे सकते हैं पर ज्ञान की शीतलता और सौन्दर्य की वैश्विक दृष्टि सम्पन्नता पुस्तकों से ही मिल सकती है। मीडिया में जहाँ चित्त की चंचलता उजागर होती है पुस्तकों में वहीं समझ की गहराई निहित होती है। अत: मीडिया पुस्तकों का विकल्प नहीं बन सकतीं। पुस्तकों का संवाद वैचित्र्य से भरा होता है। ज्ञान-विज्ञान, साहित्य, दर्शन, अध्यात्म, जीवन और उसकी जटिलताएँ, विचारधाराएँ और उसकी नवीन व्याख्याएँ पुस्तकों में ही मिल सकती हैं। अत: पुस्तकों का सेवन सभ्य समाज के लिए अनिवार्य-सा लगता है। इतिहास की पुस्तकें पढ़ते हुए अतीत के चित्र हमें कितना रोमांचित करते हैं। इतिहास की भूलें और विसंगतियाँ हमें नवमार्ग का संधान कराती हैं। धार्मिक पुस्तकें वैश्विक एकता तो प्रतिपादित ही करती हैं हृदय में करुणा और प्रेम की उद्‌भावना भी करती हैं। करुणा और प्रेम का यही आधार विश्व मैत्री का मार्ग खोलता है। अत: पुस्तकों की उपयोगिता सर्वथा महत्त्वपूर्ण है। पर पुस्तकें के आसमान छूते मूल्य सरकार की पुस्तकों के प्रति उदासीनता और मीडिया के मसालेदार परोसे जनमानस को उससे दूर करते जा रहे हैं। शिक्षित समाज को इस पहलू पर गम्भीरता से सोचना होगा। प्रकाशकों को भी पुस्तकें छापकर धनपति बनने की भावना त्याग कर मिशन के रूप में पुस्तकों के प्रकाशन पर बल देना होगा। प्रकाशकों का शायद यह प्रयास भारतीय जनमत में पुस्तकों के प्रति लगाव उत्पन्न करे। अतीत में इसके उदाहरण मिलते हैं।

प्रसन्नता की बात है कि 'भारतीय वाङ्मय' में इस तरह के विचार समय-समय पर प्रकाशित होते रहे हैं। श्री मोदी इसके प्रति सचेष्ट हैं। उनकी आयु की अधिकता और शारीरिक अस्वस्थता भी उनके इस मिशन में बाधक नहीं बन पाती है। इससे मोदीजी की पुस्तकों के प्रति दृष्टि समझी जा सकती है। इस अंक में अनेक संगोष्ठियों, साहित्यिक समारोहों, पुरस्कारों (नामित) तथा साहित्य-जगत के समाचारों से पाठक रूबरू हुआ है।

—उदयप्रताप सिंह, सारनाथ

'भारतीय वाङ्मय' का अंक मई-जून 2006 प्रशंसनीय सामग्री प्रस्तुत करता है। मैं आपके सम्पादकीय 'परशुराम की प्रतीक्षा' से सोलह आने सहमत हूँ। पहलवानों, अभिनेता-अभिनेत्रियों को तो सम्मान के अनेक अवसर हैं, चिन्तक, साहित्यकारों, मनीषियों को संसद में आना चाहिए।

केवल टीवी ने ही नहीं, अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों ने भी हिन्दी को हानि पहुँचाने का फैसला कर रखा है। आठवीं कक्षा की संस्कृत-पुस्तक में 'मार्जारी' का अर्थ लिखा है—'शी कैट अर्थात् मादा बिल्ली'। इनके यहाँ नर बिल्ली भी होती है। बेचारे अर्जुनसिंह क्या जानें कि बिल्ली के साथ बिलाव होता है। **—विश्वप्रकाश दीक्षित 'वटुक'**

साहिबाबाद

प्रत्येक अंक की भाँति मार्च-अप्रैल 2006 का अंक मिला। सम्पादकीय भी सारगर्भित है। वास्तव में हमारे समाज में पुस्तक-संस्कृति विकसित नहीं हो पायी है, विशेषकर हिन्दीभाषी समाज में। इस अंक की रचनाएँ उत्कृष्ट हैं। पत्रिका सूचना, ज्ञान और साहित्यिक-सांस्कृतिक हलचल का अक्षत्र कोश है। **—डॉ० वीरेन्द्रकुमार सिंह**

सुनाबेडा (उड़ीसा)

'भारतीय वाङ्मय' का मई-जून अंक कल ही मिला। इसके पूर्व मार्च-अप्रैल अंक मिल गया था। 'पुस्तकें तलाशते पाठक, पुस्तकें तलाशती पाठक' तथा 'परशुराम की प्रतीक्षा' दोनों लेख अच्छे लगे। चुभते पर सरस को उद्‌घाटित करते लेख, पाठकों को सोचने के लिए बाध्य करते हैं। आपके ये लेख सम्पादकीय के प्रतिमान स्थापित करते हैं।

—विश्वनाथ पाण्डेय, पटना

'भारतीय वाङ्मय' में नये-नये विचार पढ़ने को मिल रहे हैं। 'परशुराम की प्रतीक्षा' लेख चिन्तन करने को है। आज देश की राजनीति इतनी गिरी हुई है, हम सोच नहीं सकते। आज संसद के चित्र का अवलोकन करें तो शरम आती है। वो दिन कहाँ गये? बड़े-बड़े साहित्यकार, बुद्धिजीवी आदि ने अपना योगदान अर्पण किया था, जिससे संसद की शोभा बढ़ी थी। आज की राजनीति डूबी जा रही है। आप की पत्रिका में निर्भय से ऐसे विचार प्रकाशित हो रहे हैं। मई-जून 2006 की पत्रिका में श्री हृदयनारायण दीक्षित का लिखा 'अज्ञान के अन्धकार को भेदती पुस्तकें' पठनीय है। कई जानकारी इसमें प्राप्त हो रही है। आपका परिश्रम सराहनीय है।

—बी०एस० शांताबाई

कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति, बेंगलूर

''हमें स्वराज्य मिल गया, हमने जनतंत्र को चादर ओढ़ ली किन्तु उस जनतंत्र के लिए देश को विचारवान नहीं बनाया।'' आपके सम्पादकीय (भारतीय वाङ्मय, वर्ष 7, अंक 5-6; मई-जून 2006) की यह पंक्ति बहुत प्रभावशाली है। 'परशुराम की प्रतीक्षा' शीर्षक यह सम्पादकीय प्रेरणाप्रद है, जैसे कि पिछले अंकों में भी रहे हैं। पृष्ठ 17 पर—'माखनलाल चतुर्वेदी बालिका विद्यालय में' शीर्षक आपका संस्मरण बहुत पसन्द आया। बधाई लीजिए।

'भारतीय वाङ्मय' में पुस्तकों की समीक्षा के साथ-साथ हिन्दी-सेवा सम्बन्धी महत्त्वपूर्ण सामग्री का संयोजन आप करते हैं। 'यत्र-तन्त्र-सर्वत्र' के अलावा श्रीमती मृणाल पाण्डे का लेख—'आनन्दवन काशी' महत्त्वपूर्ण है। 'भाषा को जीवंत बनाइए' (पृ० 9) का सुझाव उपयोगी एवं समसामयिक है। 'विश्व पुस्तक मेला 2006' पर आपका मार्च-अप्रैल 2006 का अंक भी संग्रहणीय है।

—अखिल विनय

विश्व हिन्दी सेवी समाचार, मुम्बई

इस मास की नई पुस्तकें

तथापि (उपन्यास) प्रमोद त्रिवेदी 150
सुरजू के नाम (उपन्यास) जयवन्ती डिमरी 65
रंगमंच (उपन्यास) छ्वे इन हुन 250
अपने पराये (कहानी-संग्रह) कृष्ण खटवाणी 100
गुफा का आदमी (कहानी-संग्रह) संजीव 100
वहीं रुक जाते (कहानी-संग्रह) नरेन्द्र नागदेव 100
सीढ़ियों का बाजार (कहानी-संग्रह) मुक्ता 90
भूमिकाएँ खत्म नहीं होतीं (कविता-संग्रह) हरीशचन्द्र पाण्डे 90
दो शरण (कविता संकलन) निराला 150
जो घर फूँके (व्यंग्य-संग्रह) ज्ञान चतुर्वेदी 210
ब्रह्मपुत्र के किनारे किनारे (यात्रा-वृत्तांत) साँवरमल सांगानेरिया 265
कविता : पहचान का संकट (आलोचना) नन्दकिशोर नवल 230
छोटे छोटे सुख (ललित-निबन्ध) रामदरश मिश्र 100
सहज समांतर कोश (कोश) अरविंद कुमार, कुसुम कुमार 395
नवशती हिंदी व्याकरण (भाषा) बदरीनाथ कपूर 95
हिन्दी कथा साहित्य में मध्यकालीन भारत (आलोचना) सुधा मित्तल 400
बाबूराज और नेतांचल (शासन तंत्र) टी०एस०आर० सुब्रमणियन् 300

पुस्तक समीक्षा

घोड़े पै हौदा हाथी पर जीन

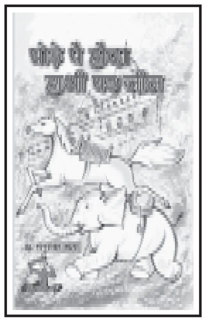

डॉ० भानुशंकर मेहता

प्रथम संस्करण : 2006

ISBN : 81-89498~12~6

अनुराग प्रकाशन, वाराणसी

मूल्य : 120.00

काशी नटराज की नगरी है। इस नगर में नित्य नई घटनाएँ होती हैं जो इतिहास बनते-बनते कहानी बन जाती हैं, जिन्हें कालान्तर में नाट्य रूपान्तरित कर उनकी पुनरावृत्ति की जाती है। ये कहानियाँ अपनी संवेदना के कारण सजीव हो उठती हैं और सहजता से रंगमंच पर अवतरित हो जाती हैं।

ईस्ट इण्डिया कम्पनी के वारन हेस्टिंग्स काशी-नरेश चेतसिंह को प्रताड़ित करने और गिरफ्तार करने काशी आते हैं, जनता के विद्रोह ने उन्हें सहसा भागने पर मजबूर किया, लोगों ने कहा—घोड़े पै हौदा और हाथी पर जीन, भाग गया वारन हेस्टिंग्स। यह काशीवासियों की जीवंतता का प्रतीक है।

प्रमुख हिन्दी लेखकों प्रेमचंद, प्रसाद, विश्वम्भरनाथ शर्मा 'कौशिक', चंद्रधर शर्मा 'गुलेरी', शिवप्रसाद मिश्र 'रुद्र', मालती जोशी और नाट्य निदेशक तथा रंगकर्मी डॉ० भानुशंकर मेहता की कहानियाँ रंगमंच पर सजीव हो उठती हैं।

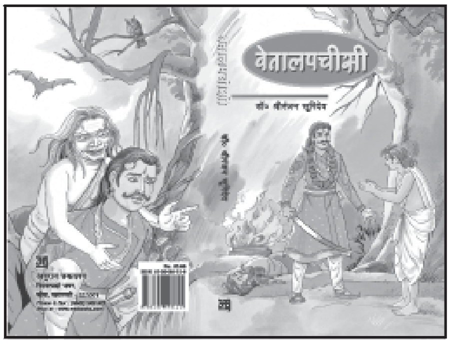

वेतालपचीसी

डॉ० श्रीरंजन सूरिदेव

प्रथम संस्करण : 2006

ISBN : 81-89498~11~8

अनुराग प्रकाशन, वाराणसी

मूल्य : 80.00

'वेतालपचीसी' वेताल द्वारा राजा त्रिविक्रमसेन (विक्रमादित्य) को कही गई पच्चीस कहानियों का संग्रह है। यह कथा-संग्रह महाकवि गुणाढ्य की विलुप्त 'बृहत्कथा' की परम्परा में परिगणनीय है। इसमें भी 'बृहत्कथा' की भाँति अद्भुत और रोमांचकारी यात्रा-विवरणों तथा विचित्र प्रणय-प्रसंगों का मनोहारी विनियोग हुआ है। 'वेतालपचीसी' को 'बृहत्कथा' का परोक्ष वंशज कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। यद्यपि इसकी कथाओं की अपनी मौलिकता है।

'वेतालपचीसी' रोचक लोककथाओं का सुशोभन एवं सुव्यवस्थित संकलन है। इन कहानियों का, ग्यारहवें शतक में प्रचलित सर्वप्राचीन रूप क्षेमेन्द्र की 'बृहत्कथा-मंजरी' तथा सोमदेव के 'कथासरित्सागर' में उपलब्ध होता है। ये कहानियाँ बहुत ही हृदयावर्जक, बुद्धिवर्द्धक, ज्ञानोन्मेषक और नीतिप्रद हैं, साथ ही कौतूहलोत्पादक भी।

स्वयं वेताल के शब्दों में—"ये कथाएँ कामदायिनी हैं। जो इसके अंशमात्र को भी कहेगा या सुनेगा, वह तत्क्षण पापमुक्त हो जायगा। जहाँ भी ये कहानियाँ कही जायेंगी, वहाँ यक्ष, राक्षस, डाकिनी, वेताल, कुष्माण्ड, ब्रह्मराक्षस आदि का प्रभाव नहीं पड़ेगा।"

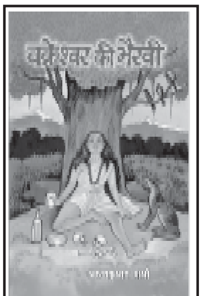

वक्रेश्वर की भैरवी

अरुणकुमार शर्मा

प्रथम संस्करण : 2006

ISBN : 81-7124-491-2

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

मूल्य : 180.00

'वक्रेश्वर की भैरवी' योग-तन्त्र-परक कथाओं का संग्रह है। यद्यपि ये अविश्वसनीय और असम्भव-सी लगेगी किन्तु स्वाभाविक भी है। आज के वैज्ञानिक युग में इन पर विश्वास करना मुश्किल है—इन्द्रियों की सीमा से परे घटित घटनाओं पर। इस भौतिक जगत में दो सत्ताएँ हैं—आत्मपरक सत्ता और वस्तुपरक सत्ता।

वस्तुपरक सत्ता के अन्तर्गत आने वाली वस्तुओं को तो प्रमाणित किया जा सकता है, लेकिन आत्मपरक सत्ता को नहीं। इसलिए कि आत्मपरक सत्ता की सीमा के अन्तर्गत जो कुछ भी है, उनका अनुभव किया जा सकता है, और उनकी अनुभूति की जा सकती है। अनुभव मन का विषय है और अनुभूति है आत्मा का विषय। दोनों में यही अन्तर है। मन का विषय होने के कारण किसी न किसी प्रकार एक सीमा तक अनुभवों को तो व्यक्त किया जा सकता है लेकिन अनुभूति को व्यक्त करने के लिए कोई साधन नहीं है क्योंकि वह है आत्मा का विषय। मन को एकाग्र कर आत्मलीन होने पर इन्द्रियातीत विषयों की अनुभूति होती है।

वेद परम ज्ञान हैं और तंत्र हैं गुह्य ज्ञान, जो अपने आप में अत्यन्त रहस्यमय गोपनीय और तिमिराच्छन्न है। उसके वास्तविक स्वरूप से परिचित होने के लिए जहाँ एक ओर योग तंत्र पर शोध एवं अन्वेषण किया, वहीं इसकी ओर प्रच्छन्न, अप्रच्छन्न रूप में संचरण-विचरण करके सिद्ध योगी साधकों और अति गोपनीय ढंग से निवास करने वाले संत-महात्माओं की खोज में हिमालय और तिब्बत की जीवन-मरण-दायिनी हिम-यात्रा भी की। पूरे तीन साल रहा तिब्बत के रहस्यमय वातावरण में। उन्हीं अलौकिक और अभौतिक घटनाओं और चमत्कारपूर्ण अविश्वसनीय अनुभव 'वक्रेश्वर की भैरवी' में पढ़िए।

प्रारम्भिक शिक्षा के मूलभूत तत्त्व

डॉ० प्रवीणचन्द्र श्रीवास्तव

प्रथम संस्करण : 2006

ISBN : 81-7124-506-4

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

मूल्य : सजिल्द : 200.00, अजिल्द : 120.00

यह पुस्तक प्राथमिक शिक्षा पर एक गहन दस्तावेज है। लेखक ने अपने अध्यापन जीवन के दौरान किये गये प्रयोगों को अत्यन्त रोचक एवं सहज शैली में प्रस्तुत किया है। प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में एक ऐसे साहित्य की कमी महसूस की जा रही थी जिसमें प्राथमिक शिक्षा से सम्बन्धित आधुनिक संकल्पनाएँ, अभिनव प्रयोग तथा अद्यतन आँकड़े एक ही ग्रन्थ में उपलब्ध हों। इस पुस्तक के प्रकाशन में मुख्य रूप से यही दृष्टि है।

प्राथमिक शिक्षा समस्त शिक्षा-व्यवस्था की आधारशिला है। आज शिक्षा अपने सामाजिक दायित्वों की पूर्ति करने में पूर्णतया असफल है। आज हम उस पूर्णता को प्राप्त नहीं कर पाये हैं जिसकी अपेक्षा शिक्षा-व्यवस्था से की जा रही है। अधिकांश व्यक्ति शिक्षा के वास्तविक अर्थ को समझने में असमर्थ हैं। सम्पूर्ण मानव समाज आज अपने को असुरक्षित महसूस कर रहा है। यदि कहीं से कोई आशा की जा सकती है। वे ही इस देश के भविष्य हैं। यदि सचमुच एक नये संसार की रचना करनी है तो शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिए प्रस्फुटन और बच्चों में छिपी प्रतिभाओं का विकास। बच्चों में एक ऐसी अज्ञात प्रतिभा होती है जो देश को सुखमय एवं सुरक्षित भविष्य की ओर ले जा सकती है।

प्रस्तुत पुस्तक में प्राथमिक शिक्षा से सम्बन्धित समस्त परियोजनाओं, महत्त्वपूर्ण आँकड़ों आदि को सुव्यवस्थित रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। प्राथमिक शिक्षा के सन्दर्भ में इस पुस्तक में अद्यतन जानकारी उपलब्ध करायी गई है।

लेखक की आगामी पुस्तक—'**भौतिक विज्ञान-शिक्षण**'।

मनबोध मास्टर की डायरी

डॉ० विवेकी राय

प्रथम संस्करण : 2006
ISBN : 81-89498~10~X
अनुराग प्रकाशन, वाराणसी
मूल्य : 200.00

मनबोध मास्टर की डायरी वाराणसी के 13 सितम्बर 1958 से 27 सितम्बर 1971 तक प्रति सप्ताह प्रकाशित होने वाली ग्रामीण भारत की दिग्दर्शिका है। आंचलिक पत्रकारिता होते हुए भी सामयिकता अथवा समकालीनता से ऊपर उठकर सार्वकालिक साहित्यिक सृजन का प्रतिरूप है। फीचर, रिपोर्ताज, कहानी, ललित निबन्ध, रेखाचित्र, संस्मरण, हास्य-व्यंग्य, यात्रावृत्त आदि गद्य की अनेक सशक्त विधाएँ इनमें समाहित हैं। डायरी का शरीर होते हुए अंगीभूत कहानी, रेखाचित्र, व्यंग्य-विनोद, रिपार्ताज, यात्रा-वर्णन अपनी पूरी अर्थवत्ता और लालित्य के साथ विद्यमान है।

जापानी दूतावास के सांस्कृतिक विभाग के सदस्य तामोनी मुतों ने 1 मई 1962 के पत्र में लेखक को लिखा था—आपकी यह अत्युत्कृष्ट कृति 'भारत के ग्रामीण साहित्य का प्रतीक' कही जा सकेगी। आप स्वयं ग्र्रम में निवास करके कृषकों के साथ दैनिक जीवन बिताते हैं। अर्थात् साहित्यकार के रूप में आपकी जड़ ग्रामीणों के जीवन में तथा उनके सुख-दुःख में बहुत गहराई तक बढ़ी हुई है। इसी कारण आपकी कृति ग्रामीण जीवन की तथ्यपूर्ण परिस्थितियों से भरी हुई है।

विवेकी राय कविता लिखते थे, किन्तु 1960 से कविता लिखना बन्द कर दिया। उनके शब्दों में ''एक प्रकार से कविता का जो मेरा संस्कार था वह छन्दबद्ध न होकर डायरी में समाविष्ट होने लगा, जो कवि था वह गद्यकार के रूप में डायरियों में प्रवाहित होने लगा, उसमें डायरी तो नाममात्र की ही थी, उसमें कहानी, शुद्ध कहानी भी लिखता था और यात्रा-वर्णन, रिपोर्ताज, संस्मरण, सारी-सारी विधायें उस डायरी में आ जाती थीं। ढाँचा डायरी का है, शिल्प डायरी का है—कभी कोई दृश्य देखा, कोई बात हुई, कोई घटना हुई, उसका संस्मरण आ गया। कहीं रिपोर्ताज का रूप आ गया। कभी कहानी का रूप ले लिया। अपने इर्द-गिर्द गँवई जीवन को बहुत सहजता से जीते हुए मुझे विषय की कमी नहीं पड़ी।''

'मनबोध मास्टर की डायरी' अपनी स्थायी मूल्यवत्ता लिये शिखरों के साथ एकाकार हो अपनी आभा बिखेरती है। इनमें कालजयी गरिमा है। यदि किसी काल विशेष से कोई रचना जुड़ी है तो भी वह उस काल को इस कोण से प्रस्तुत करती है कि कालातीत हो जाती है। अपनी इस मौलिक शिल्प साधना और लेखकीय निष्ठा के कारण मनबोध मास्टर बनाम विवेकी राय हिन्दी साहित्य की एक विभूति बने रहेंगे।

गाहड़वालों का इतिहास

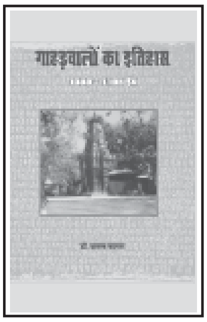

डॉ० प्रशान्त कश्यप

प्रथम संस्करण : 2006
ISBN : 81-7124-504-8
विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
मूल्य : 220.00

गाहड़वाल राजवंश ने वर्तमान उ०प्र० के सम्पूर्ण भू-भाग पर लगभग सौ वर्षों तक शासन किया। इनके साम्राज्य में वर्तमान मध्य प्रदेश एवं बिहार का भी कुछ भाग सम्मिलित था। इन्होंने उत्तर भारत की एकमात्र ऐसी सत्ता के रूप में शासन किया जिसने पश्चिम से होने वाले मुस्लिम आक्रमण का प्रतिरोध सौ वर्षों तक किया। गाहड़वाल यद्यपि वैष्णव धर्मानुयायी थे, जैसा कि इनके अभिलेखों से स्पष्ट है। किन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि इनके राज्यकाल में सभी धर्मों के प्रति उदारता की नीति अपनायी गयी। उदाहरणस्वरूप हम कह सकते हैं कि इस काल में बौद्ध धर्म यद्यपि अवनति की ओर अग्रसर था किन्तु दूसरी ओर अभिलेखों से इस बात की पुष्टि होती है कि गाहड़वाल राजा गोविन्दचंद्रदेव की रानी कुमारदेवी ने सारनाथ, वाराणसी में बौद्ध भिक्षुओं को बिहार दान किया। साथ ही साथ उसने 'धर्मराजिका स्तूप' को पुनः शिलाकञ्चुकों से आच्छादित किया, जिसकी नींव मौर्य सम्राट अशोक ने डाली थी। काशी गाहड़वालों की राजधानी थी; यहाँ अनेक मन्दिरों एवं तालाबों का निर्माण हुआ किन्तु इनमें से इस समय केवल कर्मदेश्वर महादेव मन्दिर (कन्दवा, वाराणसी) के अतिरिक्त किसी अन्य मन्दिर के अवशेष नहीं मिलते। 'गाहड़वालों का इतिहास' की प्रामाणिकता के लिए चौरासी अभिलेखों का संग्रह किया गया है, साथ ही समकालीन साहित्य का भी उपयोग किया गया है। गाहड़वालों के लुप्त इतिहास को पुनजीर्वित करने का यह महत्त्वपूर्ण प्रयास है।

स्त्रीत्व : धारणाएँ एवं यथार्थ

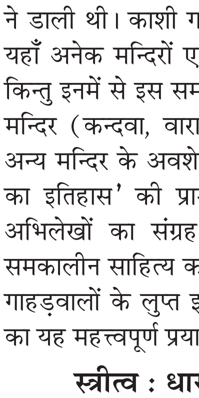

प्रो० कुसुमलता केडिया
प्रो० रामेश्वरप्रसाद मिश्र

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
मूल्य : 180.00

'स्त्रीत्व-धारणाएँ एवं यथार्थ' अत्यन्त महत्त्वपूर्ण जानकारियों से युक्त पुस्तक है। अधिकांश हिन्दी पाठक इन जानकारियों से अछूते हैं। जिस तरह लेखकद्वय ने स्त्री के यथार्थ और घटित से जुड़े विश्व भर के इतिहास का आकलन किया है वह उनके गहन ज्ञान और सुचिंतित विश्लेषण के प्रति आश्वस्त करता है। यूरोप क्रिश्चिएनिटी के हवाले से पश्चिम की स्त्री के साथ हुए अमानवीय शोषण की प्रामाणिक जानकारियों के साथ इटली और फ्रांस में हुए क्रमशः सत्रहवीं, उन्नीसवीं शताब्दी के संगठित स्त्री-आन्दोलनों का इतिहास हमारी आँखें खोल देने वाला है। हमारी हताशा और हीनता से उबरने वाला भी। पुस्तक हमें स्त्री-विषयक मुद्दे के आकलन और विमर्श के लिए एक व्यापक दृष्टि भी देती है। वस्तुतः कभी भी समस्या का विश्लेषण और समाधान एकांकी दृष्टि और सोच के साथ नहीं किया जा सकता। हमारी सोच और दृष्टि को समृद्ध करने के लिए यह पुस्तक एक संदर्भ-ग्रन्थ की तरह है।

—**डॉ० सूर्यबाला**, मुम्बई

उत्तरशती के उपन्यासों में स्त्री

डॉ० शशिकला त्रिपाठी

प्रथम संस्करण : 2006
ISBN : 81-7124-
विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
मूल्य : 180.00

'उत्तर शती के उपन्यासों में स्त्री-विमर्श' में समीक्षिका की बेहद सुथरी, संतुलित दृष्टि ने मुझे आकृष्ट किया। अपनी भूमिका की शुरुआत में ही उन्होंने लिखा है—''मुक्ति या स्वतंत्रता, कृपा से प्राप्त वस्तु नहीं है। आगे बढ़कर स्वयं प्रयत्नपूर्वक लेने की आवश्यकता होती है। मुक्ति किसी की सम्पत्ति भी नहीं कि यह प्रश्न उठे कि कितनी ली जाये या कितनी दी जाये। इसके प्राप्त हो जाने पर भी सतत चौकस रहने की जरूरत होती है।''

यह वह दृष्टि है जो अधिकांश स्त्री समस्याओं के विश्लेषकों और स्वयं स्त्रियों को भी पता नहीं होती। शायद इसीलिए स्त्री-विमर्श के इतने धूम-धड़ाकों के बावजूद, स्त्री से जुड़े सटीक प्रश्नों और पत्रों का सम्यक् निरूपण नहीं हो पाया है।

अच्छा यह भी लगा है कि स्त्री कथाकारों के उपन्यासों का विश्लेषण सिर्फ स्त्रीवादी दायरों में समेट कर नहीं किया गया है वरन् स्त्री के व्यक्ति-पक्ष को विमर्श का केन्द्र बनाया गया है और सबसे बढ़कर, डॉ० त्रिपाठी की दृष्टि पॉजिटिव और सोच में पारदर्शिता है।

स्पष्टतः यह पुस्तक छोटी समीक्षाओं (रिव्यूज़) का संकलन होने के बावजूद एक गम्भीर विवेच्य पुस्तक के रूप में अपनी जगह बनाती है। समीक्षा की भाषा भी गम्भीर होने के साथ-साथ सहज प्रवाही और पठनीय है।

—**डॉ० सूर्यबाला**, मुम्बई

सम्प्रेषण और रेडियो-शिल्प

विश्वनाथ पाण्डेय

प्रथम संस्करण : 2005

ISBN : 81-7124-408-4

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

मूल्य : 250.00

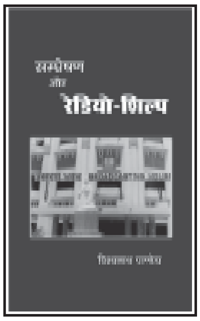

सम्प्रेषण और रेडियो शिल्प :
अनुगत और ज्ञान का अनमोल खजाना

'सम्प्रेषण और रेडियो शिल्प' रेडियो को नजदीक से जानने के लिए एक जरूरी पुस्तक है। श्री विश्वनाथ पाण्डेय ने अपने अनुभवों को कुछ इस प्रकार सजाया है कि आम श्रोता तब रेडियो की कार्य प्रणाली एवं उसकी सुदृढ़ परम्परा से अपने को अवगत करा पाने में सक्षम होगा। पुस्तक का कवर डिजाइन ही भीतरी पन्नों का साक्षी है कि पुस्तक उपयोगी एवं ज्ञानवर्द्धक है।

आकाशवाणी के पूर्व निदेशक पद पर विश्वनाथ पाण्डेय कार्यरत रहे और इसी पद से आपने अवकाशग्रहण किया। आकाशवाणी एवं दूरदर्शन के विभिन्न पदों पर काम करते हुए आपने रेडियो-प्रसारण की सूक्ष्मताओं का गहरा अध्ययन किया। पूरा ग्रन्थ तीन खण्डों में बँटा हुआ है। पहले खण्ड में चार लेख हैं। दूसरे खण्ड में छह और तीसरे खण्ड में सात तथा अन्त में सन्दर्भ ग्रन्थ-सूची। इस प्रकार अठारह उपशीर्षक के साथ 254 पृष्ठों में यह ग्रन्थ फैला हुआ है। 23 जुलाई 1927 को भारत के तत्कालीन वायसराय लार्ड इरविन ने बम्बई में इण्डियन ब्रॉडकॉस्टिंग कम्पनी के बम्बई केन्द्र के उद्घाटन के अवसर पर जो कुछ कहा था उस भाषण का अंश भी पुस्तक में साभार दिया गया है। हर प्रकार से विश्वसनीयता को सामने रखकर इस पुस्तक को उपयोगी बनाने का प्रयास किया गया है। प्रथम खण्ड के विशिष्ट लेखों में सम्प्रेषण की आवश्यकता, विकास और आधार, सम्प्रेषण प्राचीन से अर्वाचीन तक, ध्वनि : सम्प्रेषण का आधार उनके शब्दों का निर्माण और उत्पत्ति के माध्यम से रेडियो शिल्प को जानने का मौका दिया गया है। अनुभवी लेखक ने शोधपरक दृष्टि को सामने रखकर इन विशिष्ट लेखों में रेडियो सृजन की यात्रा को रेखांकित किया है। ये सारे लेख 32 पृष्ठों में सिमटे हुए हैं। गागर में सागर की तरह विचारों के गुंफन से पृष्ठों के फैलाव को जहाँ एक ओर रोका गया है, वहीं दूसरी ओर सूचनाओं को सूक्त-शैली में पिरोकर परोसा गया है।

दूसरा खण्ड पुस्तक का महत्त्वपूर्ण सैद्धान्तिक खण्ड है। रेडियो और उसका श्रोता, रेडियो प्रसारण की भंगिमायें, विशिष्ट लेख में उपशीर्षकों में समाचार, संगीत, वार्ता, साक्षात्कार, नाटक, रूपक, विज्ञापन और उद्घोषणा पर नवीनतम जानकारियाँ हैं। चार और विशिष्ट लेखों में नवोन्मेष: कार्यक्रम में नवीनता, रेडियो, लेख, प्रसारणकर्त्ताओं के लिए उपयोगी बातें, प्रसारण के लिए अनुवाद से आम श्रोता को भली भाँति अवगत कराने का प्रयास किया गया है। 35 से 177 पृष्ठों तक इस खण्ड का फैलाव बताता है कि पुस्तक की आत्मा इसी खण्ड में है। पत्रकारिता के क्षेत्र में काम करने वाले छात्रों के लिए इस खण्ड की उपयोगिता बढ़ जाती है। प्राय: रेडियो से सम्बन्धित पुस्तकों में अनुभव की कमी दिखलायी पड़ती है। विश्वनाथ पाण्डेय ने अनुभवों को क्रम से सजाया है और ज्ञान की रोशनी में प्रत्येक पृष्ठ को आलोकित होने का मौका दिया है।

तीसरे और अन्तिम खण्ड में छह विशिष्ट लेख हैं। पृष्ठ 181 से 252 पृष्ठों तक इन तमाम लेखों का विस्तार है। यह खण्ड रेडियो के तकनीक, बदलती सामाजिक परिस्थितियों में मीडिया की भूमिका, साहित्य पर संचार साधनों का प्रभाव, आकाशवाणी और हिन्दी तथा पर्यावरण संरक्षण और संचार माध्यम की भूमिका पर विस्तार से चर्चा करता है यानी यह खण्ड उपसंहार भी है और तकनीक की ओर ध्यान देने का आधार भी।

—डॉ० शंकर प्रसाद
बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन
कदमकुँआ, पटना-800 003

ग्राम-देवता

डॉ० हरगुलाल गुप्त

सन्मार्ग प्रकाशन, जवाहरनगर
दिल्ली-110 007

मूल्य : 150.00

'ग्राम देवता' डॉ० गुप्त का आंचलिक उपन्यास है। फणीश्वरनाथ रेणु ने आंचलिक उपन्यास की जो शुरुआत की उसे अनेक उपन्यासकारों ने आगे बढ़ाया। ग्राम-देवता—ससुराल में सताई गई ब्राह्मणी सलोनी बुआ अपने मायके करौरा गाँव में आ जाती है। उनका जीवन पूरे गाँव का इतिहास है। हर घर की सच्ची कहानी का पूरा दस्तावेज है यह ग्राम बुआ। इस आंचलिक उपन्यास में डॉ० गुप्त ने अनेक कथा-प्रसंगों और पात्रों के माध्यम से समग्र कथावस्तु का संगुम्फन किया है। आंचलिक उपन्यासों के क्षेत्र में यह विशिष्ट रोचक रचना है।

अनुभव

सियाराम मैत्रेय

शान्ति विहार, सेन्ट्रल जेल के सामने, वाराणसी-2

श्री मैत्रेय स्वतंत्रता सेनानी हैं, स्वतंत्रता के बाद शिक्षक पद से मुक्त होकर पुलिस की सेवा में आये। पुलिस की सेवा में आने पर भी खादी परिधान नहीं त्यागा। एक कर्मठ, ईमानदार, राष्ट्रभक्त और प्रयोगधर्मी सुधारक निस्पृह व्यक्तित्व के धनी। कारागार प्रशासन में आकर बन्दी सुधार के महत्त्वपूर्ण कार्य किये। श्री मैत्रेय के विविध संस्मरण इस पुस्तक में हैं। भारत की वर्तमान दुर्दशा के सन्दर्भ में श्री मैत्रेय ने अनेक उपाय सुझाये हैं—

(1) दस वर्ष तक की अवधि तक संविधान को लम्बित रखकर शासन देश और प्रदेशों में चलाया जाये।

(अ) सभी दल भंग कर दिये जायें।

(ब) कोई नया दल न बने।

(2) तुरन्त नया संविधान बनाने के लिए एक परिषद का गठन किया जाये।

(3) निम्न बातों पर विशेष ध्यान दिया जाये—संविधान किसी दल को मान्यता न दे, इस प्रकार व चुनाव से बाहर रहें।

85 वर्षीय कर्मनिष्ठ त्यागी स्वतंत्रता सेनानी आज देश की दशा से दु:खी यह अनुभव करता है। **अनुभव** मैत्रेयजी के अनुभवों की गाथा है जो अत्यन्त प्रेरक और मार्गदर्शक है।

अभिनव उपनिषद

शरदकुमार साधक

प्राप्ति स्थान : जय जगत सेवा संस्थान, बी० 38/48, तुलसीपुर, वाराणसी-221 010

व्यक्तिपरक चिन्तन, मनन और अन्तर्द्वन्द्व की नई कविता शैली में समष्टिपरक सूत्रात्मक अभिव्यक्ति। गाँधीवादी साधक द्वारा प्रस्तुत अभिनव उपनिषद—

मैं आत्मानन्द के लिए गाता हूँ तो
सारी जनता मस्ती में झूमकर
मेरे स्वर में स्वर मिला बैठती है
और, हम सब एक हो जाते हैं।
अद्वैत हो जाते हैं।

विशिष्ट पत्रिकाएँ

अक्षरम् संगोष्ठी (त्रैमासिक)
सम्पादक : नरेश शांडिल्य, ए-5, मनसाराम पार्क, सण्डे बाजार, उत्तम नगर, नई दिल्ली - 59

तथ्य भारती (मासिकी)
सम्पादक : दीनानाथ दुबे, 46, तिलकनगर, पत्रपेटी-160, कोटा - 324007

हिंसा-विरोध (मासिक)
सम्पादक : डॉ० रजनीकान्त जोशी, नगर शेठ का व० हिंसा विरोधक संघ, घीकाँश रोड, अहमदाबाद-1

कलरव (चतुर्मासी पत्रिका)
सम्पादक : हेम भटनागर, 18 चित्र विहार, देहली-110092

ताप्ती लोक (पाक्षिक)
सम्पादक : घनश्यामप्रसाद सनाढ्य, 3-4 लोअर ग्राउण्ड, गंगोत्री अपार्टमेन्ट न्यू सिविल रोड, सूरत-1

पुस्तकें प्राप्त

स्थायित्व के परिप्रेक्ष्य में साहित्य और साहित्यकार, डॉ० रजनीकान्त जोशी, अमृता प्रकाशन, सी/5 'ओजस', नेहरू नगर, अहमदाबाद-15

हिन्दी : हम सबकी भाषा, डॉ० रजनीकान्त जोशी, वही

पीयूषिका (भक्ति-नीतिपरक दोहे), डॉ० कृष्णमुरारी शर्मा, मौजीराम स्मृति न्यास, ए-4 रिंग रोड, नई दिल्ली-110 049

धूप में चाँदनी (शायरी), शंकर सोनाले, म०प्र० तुलसी साहित्य अकादमी, 50 सुन्दरम् बंगला, भोपाल

कुछ पुरसा हाल चुनार का, डॉ० भानुप्रताप तिवारी, सम्पादक : लक्ष्मीचन्द्र श्रीवास्तव 'रमेन्दु', जनसेवी प्रकाशन, चुनार

गुरु ग्रन्थ साहिब की शिक्षा (भगत कबीर के सन्दर्भ में) प्रधान सम्पादक : प्रो० महेन्द्रनाथ राय, गुरु ग्रन्थ साहिब की शिक्षा भगत कबीर के विशेष सन्दर्भ में, हिन्दी विभाग काशी हिन्दू विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी से सन्दर्भित स्मारिका।

उत्तर संस्कृति, दलित विमर्श और निराला, अवधेशनारायण मिश्र, सुनीता कुशवाहा, किशोर विद्या निकेतन, भदैनी, वाराणसी मूल्य : 200.00

बहुत देर बाद (कविता संग्रह), वाचस्पति अशेष, रमणिका फाउण्डेशन, ए-221, ग्राउण्ड फ्लोर, डिफेंस कालोनी, नई दिल्ली-110 024

प्रेम स्रोत, सूर्यदीन यादव, छात्र प्रकाशन, 10 साहित्य भवन, पूरेगंगाराम, राजूपुर, सुल्तानपुर

विशिष्ट पत्रिकाएँ

भाषा स्पंदन (त्रैमासिक)
सम्पादक : डॉ० सरगु कृष्णमूर्ति, कर्नाटक हिन्दी अकादमी, बेंगलूर-560 095

संकल्प (त्रैमासिक) प्रेमचंद विशेषांक-2
सम्पादक : प्रो० टी० मोहन सिंह, मुख्य परामर्शदाता : डॉ० विवेकी राय, हिन्दी अकादमी, भल्लापुर, हैदराबाद-500 076

संचारिका (मासिक)
सम्पादक : नारायण वाकळे, महाराष्ट्र हिन्दी प्रचार सभा, हिन्दी भवन, शहागंज, औरंगाबाद-431 001

मैसूर हिन्दी प्रचार परिषद पत्रिका (मासिक)
सम्पादक : डॉ० बि० राम संजीवय्या, 58, वेस्ट ऑफ कार्ड रोड, राजाजी नगर, बेंगलूर

सेवा ज्योति (द्वैमासिक)
सम्पादक : आशीष गौतम, दिव्य प्रेम सेवा मिशन, सेवा कुञ्ज, चण्डीघाट, पो० कनखल, हरिद्वार

नागरी वाङ्मय (वार्षिक)
सम्पादक : कृष्णस्वरूप पाण्डेय, नागरी भवन, बंदरिया बाग, सूफीपुरा, बहराइच-271 801

सेवा चेतना (अर्द्धवार्षिक)
लोक साहित्य विशेषांक
सम्पादक : डॉ० गणेशदत्त सारस्वत, भाऊराव देवरस सेवा न्यास, सरस्वती कुंज, निरालानगर, लखनऊ-226 020

सरयूधारा (कविता अंक)
सम्पादक : डॉ० शैलेन्द्रकुमार त्रिपाठी, पं० विश्वनाथ त्रिपाठी शिक्षण संस्थान, बरहज, देवरिया

हमारी साधना (त्रैमासिक)
सम्पादक : श्रीमती महेश प्रकाश, डी-28, डिफेंस कालोनी, नई दिल्ली-24

जन प्रहरी (मासिक)
सम्पादक : ओमप्रकाश पाण्डेय, 180/ए, सेन्ट्रल कालोनी, पो० भक्तिनगर, सिलिगुड़ी-734007

भारतीय वाङ्मय

मासिक

वर्ष : 7 **जुलाई 2006** **अंक : 7**

प्रधान संपादक
पुरुषोत्तमदास मोदी

संपादक : **परागकुमार मोदी**

वार्षिक शुल्क : रु० 50.00

अनुरागकुमार मोदी
द्वारा
विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
के लिए प्रकाशित

वाराणसी एलेक्ट्रॉनिक कलर प्रिण्टर्स प्रा० लि०
वाराणसी *द्वारा मुद्रित*

डाक रजिस्टर्ड नं० ए डी-174/2003
RNI No. UPHIN/2000/10104
प्रेस रजिस्ट्रेशन एक्ट 1807 ई० धारा 5 के अन्तर्गत
Licenced to post without prepayment at
G.P.O. Varanasi
Licence No. LWP-VSI-01/2001

सेवा में,

प्रेषक : (If undelivered please return to :)

☎ : Offi. : (0542) 2421472, 2413741, 2413082, (Resi.) 2436349, 2436498, 2311423 ● Fax : (0542) 2413082
E-mail : sales@vvpbooks.com ● Website : **www.vvpbooks.com**

विश्वविद्यालय प्रकाशन
प्रमुख प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता
(विविध विषयों की हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी पुस्तकों का विशाल संग्रह)

विशालाक्षी भवन, पो०बाक्स 1149
चौक, वाराणसी-221 001 (उ०प्र०) (भारत)

VISHWAVIDYALAYA PRAKASHAN
Premier Publisher & Bookseller

(BOOKS IN HINDI, SANSKRIT & ENGLISH FOR STUDENTS, SCHOLARS, ACADEMICIANS & LIBRARIAN)

Vishalakshi Building, P.O. Box : 1149
Chowk, VARANASI-221 001(U.P.) (INDIA)